

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक - पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]



-ग्रन्थाङ्क १७-

अज्ञातकर्तृकः

नृत्तसङ्ग्रहः



— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक - पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]



- ग्रन्थाङ्क १७ -

अज्ञातकर्तृकः

नृत्तसङ्ग्रहः



— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

RĀJASTHĀNA PURĀTANA GRANTHAMĀLĀ

Published by the Government of Rajasthan

A Series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa,
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular.

★

General Editor

Acharya **JINA VIJAYA MUNI**, Puratattvacharya

Honorary Member of the German Oriental Society, Bhandarkar Oriental
Research Institute, Poona and Gujarat Sahitya Sabha, Ahmedabad.

Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute.

No. 17

NRTTA SAMGRAHA

(A small treatise on the art of dancing)

★

edited by

Prof. Dr. **PRIYABALA SHAH**

M. A. Ph. D. (Bombay) D. Litt (Paris)

(Head of the Department of Ancient Indian
Culture : Ramanand Arts College, Ahmedabad.)

Rajasthan Oriental Research Institute

Jaipur

1956

अज्ञातकर्तृकः

नृत्तसङ्ग्रहः



सम्पादिका

डॉ. प्रियवाला शाह. एम्. ए. पीएच्. डी. (बंबई)
डि. लिट् (पेरिस)

(प्राध्यापक, रामानन्द आर्टस् कालेज, अहमदाबाद)



—: प्रकाशनकर्ता :—

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

संचालक-राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक -

संचालक - राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर, के आदेशानुसार - गोपालनारायण बोहरा ।

मुद्रक -

जयन्ति दलाल, वसंत प्रिण्टिंग प्रेस, घीकाटा रोड, अहमदाबाद ।

और

मुकुन्द के. शास्त्री, इला प्रिण्टरी (वल्लभ मुद्रणालय) पानकोर नाका, अहमदाबाद ।

प्रधान संपादकीय वक्तव्य

*

राजस्थान और गुजरात, मालवा आदि प्रदेशोंमें प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंके बिखरे हुए एवं जीर्णशीर्ण दशामें जो संग्रह प्राप्त होते हैं उनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं प्राचीन राजस्थानी-गुजराती भाषामें रचित छोटी बड़ी ऐसी सैंकड़ों ही साहित्यिक कृतियां उपलब्ध होती हैं जो अभीतक प्रायः अज्ञात और अप्रसिद्ध हैं। विद्वानोंका लक्ष्य प्रायः अभीतक उन्हीं सुप्रसिद्ध और सुज्ञात ग्रन्थोंके अन्वेषण एवं संशोधनकी तरफ रहा है जो यत्रतत्र यथेष्ट प्रमाणमें उपलब्ध होते हैं। ग्रन्थोंके संपादन और प्रकाशन के विषयमें भी प्रायः यही प्रथा चली आ रही है। सुप्रसिद्ध और सुज्ञात ग्रन्थोंके सिवा छोटी छोटी एवं प्रकीर्ण रचनाओंके विषयमें विद्वानोंका विशेष लक्ष्य नहीं जाता है और इसलिये अभीतक ऐसी रचनाओंके संपादन-प्रकाशनका मुख्य प्रयत्न प्रायः नहींसा हुआ है। हमारे प्राचीन इतिहास एवं सांस्कृतिक सामग्रीकी दृष्टिसे इन फुटकर रचनाओंमें जो ज्ञातव्य छिपे पड़े हैं उनकी तरफ हमारा लक्ष्य बिल्कुल नहीं गया है-ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्तिकी बात नहीं होगी।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरका कार्य प्रारंभ करते समय, हमारा मुख्य लक्ष्य इस प्रकारके प्रकीर्ण साहित्यका अन्वेषण, संग्रह, संरक्षण, संशोधन एवं प्रकाशन आदि करनेका रहा है और तदनुसार, राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला द्वारा ऐसी अनेकानेक साहित्यिक रचनाओंको, सुयोग्य विद्वानों द्वारा शोधित-संपादित कराकर प्रकाशमें रखनेका आयोजन हमने किया है।

इसी उद्देश्यके आधारानुसार, नृत्तसंग्रह नामक प्रस्तुत लघुकृति राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके १७ वें मणिके रूपमें प्रकाशित की जा रही है। इस कृतिकी १३ पत्रात्मक एक जीर्ण शीर्ण और अपूर्ण प्रति गुजरात विद्यासभाके संग्रहमें सुरक्षित है जो अहमदाबादके 'गुजरी' नामसे पहचाने जानेवाले -सत्ताहमें एक दफह बजारके फुटपाथ पर लगनेवाले-हटवाडेमें, रही कागज बेचनेवाले कबाडीके पाससे उपलब्ध हुई है। जैसा कि संपादिका विदुषीने अपनी संक्षिप्त प्रस्तावनामें सूचित किया है-इस रचनामें नृत्य-नाट्य विषयक कुछ मुख्य बातोंका वर्णन किया गया है अतः इसका नाम 'नृत्तसंग्रह' रखना समुचित समझा गया है।

इस छोटेसे ग्रन्थमें विशेष लोकप्रिय कतिपय नृत्योंके स्वरूप और प्रकारका वर्णन किया गया है जिनमें भारतके दक्षिण और उत्तर दोनों प्रदेशोंके नृत्यप्रकारोंका समावेश है। दक्षिणके मुख्य द्राविड, तैलंग और कर्णाट देश प्रचलित लोक-

नृत्योंका, जिनमें मुख्य करके उन उन देशोंकी भाषाके गीतोंके साथ अभिनय किया जाता है, वर्णन किया गया है और उत्तर प्रदेशमें प्रचलित उन नृत्योंका उल्लेख है जिनमें संस्कृत, मध्यदेशीय (आधुनिक हिन्दी) और पारसीक अर्थात् फारसी भाषाके गीतोंका व्यवहार होता है । यवनलोकोमें बहुप्रिय जकडी नामक नृत्यका भी स्वरूप बताया गया है । ग्रन्थान्तमें पश्चिम एवं उत्तर भारतमें सुप्रसिद्ध दण्डरास (जिसको गुजरातीमें दाण्डिया रास कहते हैं) का उल्लेख किया गया है ।

इस प्रकार इस छोटेसे निबन्धमें नृत्यकलाके विशेष लोकप्रिय और लोक-प्रसिद्ध प्रकारोंका सुगम और सरल संस्कृतमें जो वर्णन दिया गया है वह इस कलाके अभ्यासियोंको अवश्य मनोरंजक और ज्ञानप्रद सिद्ध होगा ।

गुजरात विद्यासभाके प्राचीन ग्रन्थ संग्रहमें अज्ञात एवं उपेक्षित रूपमें पड़ी हुई प्रस्तुत कृतिके अवलोकनद्वारा इसके महत्त्वको अवगत करके विदुषी डॉ. प्रियवाला शाहने इसका इस प्रकार संशोधन-संपादन कर प्रकाशमें लानेका जो प्रयत्न किया है वह अभिनन्दनीय है ।

अनेकान्त विहार

अहमदाबाद.

आषाढशुक्ल ८. वि. सं. २०१३

(१५-७-५६)

मुनि जिनविजय

सम्मान्य संचालक

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जयपुर

PREFACE OF THE GENERAL EDITOR

There are still hundreds of old manuscripts big and small in Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa and old Rājasthāni-Gujarāṭi lying scattered over Rājasthāna, Gujarāṭa, Mālawā and other regions of our country. Many of these are still unknown and unpublished. Up till now scholars have generally devoted themselves to works which are comparatively bulky, well known and available in great number. The same outlook prevails also amongst publishers of oriental series.

But in addition to those big and well-known works, there are many small ones on a variety of subjects which have not attracted the attention that they deserve. In fact, no major attempt has been made to edit and publish these small works on important subjects. It would be no exaggeration to say that these works which contain important material for the history and culture of our country and which embody not a negligible part of our ancient learning have been mostly neglected, probably because they are in small manuscripts and rare to find.

It has been our endeavour from the very inception of Rājasthāna Oriental Research Institute to search for, collect and preserve mss. of such small works on various subjects and also to edit and publish them. Accordingly we have arranged for critical editions of such works at the hands of competent scholars and their publication in the Rājasthāna Purātana Granthamālā.

In pursuance of this object, this small but important work Nṛtta-Saṁgraha is being published in the Rājasthāna-Purātana-Granthamālā as number 17. The ms. of this work which consists of thirteen folios is preserved in the mss. collection of Gujarāṭa Vidyā Sabhā, Ahmedabad. It would be interesting to know that this and many similar important works were rescued by the Gujarāṭa Vidyā Sabhā from the vendors of old things in the weekly market of Ahmedabad, called Gujarī.

The title of this work is missing. But as the learned editor has shown, this work treats of dancing and therefore it is appropriately named Nṛtta-Saṁgraha.

In this small work different varieties of old Indian dancing are described. It includes both the Northern and Southern types. In the Southern types are mentioned dances prevalent in Drāviḍa, Telanga and

Karṇāṭaka with the Abhinayas accompanying the songs in their languages. In the Northern, are included those dances which accompany songs in Sanskrit, Madhyadeśiya (modern Hindi) and Pārsika or Persian. The Jakkaḍi dance - so popular amongst the Yavanas - is also described. At the end of the work is mentioned the well-known Daṇḍa-Rāsa (known in Gujarāṭi as Dāṇḍiyā Rāsa).

Thus this small work in a concise form gives information about the art of dancing which, it is hoped, will be interesting and useful to students of that art and Indian culture.

Dr. Priyabālā Shah deserves our thanks for discovering this unknown and neglected work from the mss. collection of Gujarāṭa Vidyā Sabbhā and realizing its importance from its perusal for undertaking to edit it for this series.

Anekanta Vihar
Ahmedabad.
15-7-56

Muni Jinavijaya
Hon. Director,
Rajasthan Oriental Research Institute,
JAIPUR.

कृत्वाः सांप्रदायिकोः शोधानानादसासुं चरु च्वावहितमानसाः। मे लापकं वादयेयुः प्रबंधं गजरतनः। कु
 दुकस्यां ततश्चानई नो दूरी तिसति। नर्तको नर्तकी वापि दिव्यानांश्च विधि विचित्रं। माट्टकामुनिनागांश्च यद्
 गंधर्व किं नरानु। गणेशं नरतंतुं लक्ष्मीवाणीसु मासुषो। ज्येष्ठाश्चियेः गुणैर्विस्तृ बलात्तं। गमाविज्ञोत्तु
 मंडयसध्यात्तं गोलोकात्मानतः सप्तमक्षरकारात्क्रान्तस्वानंतं। गमुच्यते। इति रेणुवेद्यं तत्र कायं द्विधम
 नृहोबंधनं नातिबंधकं। गत्यादिनियतेषु त्वेधकं नृत्तमुच्यते। अतिबंधत्विनियमादथा दृशा दृशामो
 ध्या। सूत्रचालश्चास्य। णिधुवाडा विदुलागवः ततः परं शब्दचानिर्नानात्तु प्रबंधकाः। स्वरभंडादय
 गतिबंधं ध्मश्चिदुजातय। धरुणं जातयः यश्चा कतिश्च वयदा नैच। प्रत्युदिसंबंधकस्य लक्षणं द्वधु
 च्यते। गुरवंतु प्रवरेगसाश्च। लिखदनुगागतिः। मुखचालिरिति शोका नृत्तद्वैः सर्वस्वरनिःसंबन्धने
 नवीराष्टवंदागशरदिदृत्तव। स्वसंबुक्रमतानृत्तमर्थेऽर्थो जलिंक्षियेत्। अयतः रूपेण ज्ञाजापीडते
 दक्षिणैसत्ता। दृष्टेयुः स्वयं वा मरणं पी - अंतरेक्षियेत्तरंगपीतस्य मध्यतु बुद्ध्या स्वयमधिष्ठतः दृष्ट

हि। इति रास नृत्ये। इत्यादिबंधनं

Introduction

The text edited in the present work is based upon a single Ms. in the possession of Gujarat Vidysabha, Ahmedabad.
Ms. No. 868

Name—not given at the end. I have named it *Nṛtīa-saṁgraha* as it describes various kinds of Nṛttas.

Author—?

Material—Paper

Script—Devanāgarī

Extent of the Ms.—2 to 13, i. e. 12 folios (incomplete)

Size of leaves—9.25×4.25 inches

Area of writing—7.5×3.75 inches

Number of lines—10 lines per page

Number of letters—36 to 40 in each line

Writing—fairly uniform and legible

Age—not mentioned. From its appearance, nearly two to three hundred years old.

Begins—Folio No. 1 is missing. The second folio begins—

* * * * * छन्तः संप्रदायकाः ।
बाधानां नादसाध्यं च कृत्वा बह्वितमानसाः ॥

Ends

दण्डैर्विना कृतं नृत्यं रासनृत्यं तदेव हि ।
इति रासनृत्यम् । इत्यनिबन्धनृत्यम् ॥

On comparing this work with the *Samgīta-ratnākara* (Vol. 2, Page 800, ślo. 1271-72 Ānandāśrama edition), I found that the verses referred to above are a part of the section on संप्रदाय. The verses that precede are nearly 9 in number. If our Ms. began on the second side of the first folio, it would provide space for this number. I have quoted these verses in the footnote, page 1.

The name and the author of this work are not known. I was tempted to edit it, because it has some noteworthy information to give regarding dancing as it was practised in India in ancient and mediæval times. A part of its subject matter agrees with the usual information given in Nṛtya works like संगीतरत्नाकर. However, while explaining technical terms like

चिन्दु कद्विधरु, जङ्गडो etc., it traces them to the regions of their origin. This in itself is very interesting. In addition to this, its references to यवन and पारसीक types of dance give this work special importance.

As far as the language is concerned, the author does not, himself, seem to have written pure Sanskrit. So I have not tried to emend the text from the point of view of Pāṇinian grammar. In the case of non-Sanskrit words like चिन्दु, जङ्गडो and such others, I have left them as they are without attempting any uniformity in them.

Before concluding, I must not omit to tender my most sincere thanks to revered Āchārya Śrī Muni Jinavijayaji, the Honorary Director of Rajasthan Puratattva Mandir, Jaipur, who is known for the encouragement he gives to young workers in the field of research. I am greatly indebted to him for not only accepting this work for publication in Rajasthan Puratattva Series, but also for helping me in learning the craft of editing old manuscripts.

I am much indebted to my teacher Prof. R. C. Parikh, for giving much of his valuable time for discussing with me several problems connected with the preparation of the present text. As Director of the institution in which I am working, he was kind enough to get permission to undertake this work from the authorities concerned.

Ahmedabad

Priyabala Shah

1-9-1952.

[नृत्तसंग्रहः]

..... ।
 *षन्तः 'सांप्रदायिकाः ॥

* यत्रैको मुखरी ^२श्रेष्ठस्तथा प्रतिमुखर्यपि^३ ।
 ब्राह्मडावजिनौ स्कन्धावजिनौ करटाधरौ (?) ॥ १२६३

द्वात्रिंशन्मर्दलधरा वरास्तालधरद्वयम्^४ ।
 कांस्यतालधरास्वष्टाविष्टाः काहलिकद्वयम् ॥ १२६४

वांशिकौ रसिकौ व्यक्तसुरक्तप्रचुरध्वनी ।
 चत्वारो मधुरध्वाना ^५भवन्त्येते करास्तयोः ॥ १२६५

द्वौ मुख्यगायनौ सार्धमष्टभिः सह गायनैः ।
 मुख्यगायनिके चाष्टौ सहगायनिकास्तयोः ॥ १२६६

संप्रदायसमुल्लासि पात्रमेकं ^६गुणान्वितम् ।
 सर्वेऽपि रूपवन्तः स्युश्चित्रालंकरणान्विताः ॥ १२६७

गीतादिसाम्यनिपुणाः ^७प्रहर्षोत्फुल्लचेतसः ।
 उत्तमः संप्रदायोऽसौ लोके कुटिलमुच्यते ।
 तदर्धं मध्यमो न्यनोऽस्मात्कनिष्ठो निगद्यते ॥ १२६८

इति संप्रदायलक्षणम् ॥

अनुवृत्तिमुखरिण^८स्तलयोर्न्यूनपूरणम्
 तालानुवृत्तिरित्येते चत्वारः कुटिले गुणाः ॥ १२६९

संप्रदायस्य दोषः स्यादेतद्गुणविपर्ययः ॥ १२७०

इति संप्रदायगुणदोषाः ॥

संगीतज्ञैर्बुधैः सार्धं नायके प्रेक्षके स्थिते ।
 प्रविश्य रङ्गभूमिं ते तिष्ठन्तः सांप्रदायिकाः ॥ १२७१

‘संगीतरत्नाकर’ अ. ७ (आ. सं. सिरीश)

1 Ms 'दायकाः 2 ग. श्रेष्ठः सूच्या प्र° । 3 ख. 'पि । द्वौ चामजठरा-
 ब्राह्मजितौ करटाधरौ (?) । 4 ख. ग. 'धराद्वयम्' । 5 ख. 'वन्त्यो नरकास्त' ।
 6 ख. 'पत्रभयम् । 7 ग. प्रकर्षोः । 8 'णरत्ताल'.

वाद्यानां नादसाम्यं च कृत्वाऽवहित'मानसाः ।	
मेलापकं वादयेयुः प्रबन्धं गजरं ततः ॥	२
कुडुकस्यां ततश्चान्तर्ध्वनौ दूरीकृते सति ।	५
नर्तको नर्तकी वापि दिक्पालांश्च विधिं विश्रुम् ॥	३
मातृकासुनिनागांश्च यक्षगन्धर्वकिन्नरान् ।	
गणेशं भरतं तण्डुं लक्ष्मीं वाणीसुमामुषाम् ।	
ज्येष्ठाश्च ये गुणैर्विष्णुं नत्वा तद्रङ्गमाविशेत् ॥	४
नृत्तमण्डपमध्यात् तु मङ्गलाकृतिं मानतः ।	१०
सप्तसप्तकराक्रान्तस्थानं तद् रङ्गमुच्यते ॥	५
इति रङ्गप्रवेशः ॥	
तत्र कार्यं द्विधा नृत्तं बन्धकं चानिबन्धकम् ।	
गत्यादिनियमैर्युक्तं बन्धकं नृत्तमुच्यते ॥	१
'अनिबन्धं त्वनियमादथोद्देशक्रमो यथा ।	१५
मुखचालिश्चोरुपाणि ध्रुवाडा विडुलागवः ॥	२
ततः परं शब्दचालिर्नाशब्दप्रबन्धकाः ।	
स्वरमन्द्रादयो गीतप्रबन्धाश्चिन्दुजातयः ॥	३
धरूणां ज्ञातयः पश्चात् कति ध्रुवपदानि च ।	
इत्युद्दिष्टं बन्धकस्य लक्षणं 'त्वधुनोच्यते ॥	४ २०
मुखं तु पूर्वरङ्गः स्याच्चालितदनुगा गतिः ।	
मुखचालिरिति प्रोक्ता नृत्तज्ञैः पूर्वस्वरिभिः ॥	५
चन्द्रत्रिनेत्रवाराष्टवेदाङ्गशरदिक्षु च ।	
स्वसव्यक्रमतो नृत्त्वा मध्ये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥	६
अग्रतः क्षेपणाद् राजा पीडयते दक्षिणे सभा ।	२५
पृष्ठे गुरुः स्वयं वामे रङ्गपीठान्तरे क्षिपेत् ॥	७
रङ्गपीठस्य मध्ये तु ब्रह्मा स्वयमधिष्ठितः ।	
इष्टार्थं क्रियते पुष्पमोक्षणं रङ्गमध्यतः ॥	८
यतः पादस्ततो हस्तो यतो हस्तस्ततस्त्रिकम् ।	
पादस्य निर्गमं ज्ञात्वा शेषाङ्गानि नियोजयेत् ॥	९ ३०
इतस्ततोऽर्थपर्याय इङ्गने अङ्गने इति ।	
रञ्जकाय वदेत् तत्र यथाताललयोचितम् ॥	१०

आविद्धवक्त्रहस्ताभ्यां चार्यां च समपादया ।		
पुरतस्त्रिपदीं गच्छेन्नटवर्यो विलासतः ॥	११	
ततश्चन्द्रे लीनकं च कृत्वा समनखं ततः ।		35
सविलासं मन्दमन्दं तिर्यक् चालनसुन्दरम् ॥	१२	
पार्श्वद्वन्द्वं सुलूनामा चालयेत् तु मुहुर्मुहुः ।		
मन्दानिलचलद्दीपशिखेवाङ्गस्य चालनम् ॥	१३	
अथवा ऽहिफणाकारां सुलूमाहुर्मनीषिणः ।		40
व्यावर्तितौ लताहस्तौ युगपत् क्रमतो यदि ॥	१४	
भवेद् द्विशिखरत्वं च पादौ संयुक्तकुञ्चितौ ।		
गात्रं तदनुसारेण नीचं नीचं ब्रजेत् तदा ॥	१५	
तलसञ्चमनुप्राप्य सुलूवर्तनमाचरेत् ।		
भूमेरूर्ध्वस्थितिः 'कटयास्तालद्वित्रिचतुष्टयात् ।		
तलमध्येर्ध्वसञ्चाल्याः क्रमेण कथिता बुधैः ॥	१६	45
अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुल्यौ ये हस्तस्य प्रसारिते ।		
तदग्रयोरन्तरालं तालमाहुर्मनीषिणः ॥	१७	
रागालापानुगां व्यक्तशब्दालापानुसारिणीम् ।		
गतिं च सर्वदा कुर्यात् सभाजनमनोहराम् ।		
चार्या साय्या सव्यसूची पादोऽग्रतलसञ्चरः ॥	१८	50
अधस्तलपताकश्च बाहुस्तत्र प्रसारितः ।		
शिरोदृक्करपादानां युगपद् रेचनं 'वदेत् ॥	१९	
ततस्तु मध्यसञ्चेन सोत्संध्या करिहस्ततः ।		
दक्षिणश्चरणस्तस्मान्निष्क्रम्य स्वस्तिकं भजेत् ॥	२०	
सुलूचालनकं तत्र तथा नूपुरविद्विकाम् ।		55
ततस्तु तलसञ्चेन चतुरस्रं समाश्रयेत् ॥	२१	
चतुरस्रौ करौ तत्र सुलूं तत्रापि चालयेत् ।		
ततस्तलमुखाभ्यां च चार्या स्वस्तिकया तथा ॥	२२	

नृत्तसंज्ञाः

तृतीयां दिशमासाद्य 'तूर्ध्वं सञ्चयेन सम्बधतः ।		
'समां कृत्वा समनखं पूर्ववच्चाङ्गचालनम् ।		60
वैशारवरेचितं तत्र बाहू तिर्यक्प्रसारितौ ॥	२३	
ततः कुलीरिका चार्या द्वितीयं स्थानमाचरेत् ।		
मण्डलं स्थानकं तत्र स्रलवर्तनकं तथा ॥	२४	
करिहस्तकया चार्या सव्यहस्तिकरेण च ।		
उद्वेष्टितेन वामेन रङ्गमध्यं समाश्रयेत् ॥	२५	65
सभासंमुखतो हस्तौ तौ च तत्क्रियया पुटौ ।		
पार्श्वरेचितकं तत्र जानुकुञ्चितकं तथा ॥	२६	
मण्डलस्थानकं कृत्वा लताहस्तौ सुलं तथा ।		
वामो यथास्थितः कार्यो दक्षिणस्तु लताकरः		
ऊर्ध्वोर्ध्वाङ्गं यथा तत्र तदूर्ध्वं सारयेत् करः ॥	२७	70
ततस्तलमुखाभ्यां च चार्या स्वस्तिकया तथा ।		
सप्तमीं दिशमासाद्य सभां कुर्यात् तु वामतः ॥	२८	
द्वितीयायां तृतीयायां रङ्गमध्ये च यत्क्रमम् ।		
तत्क्रमं नृत्ततत्त्वज्ञश्चार्वाद्यङ्गविशेषतः ॥	२९	
यथाक्रमेण सप्तम्यामष्टम्यां रङ्गमध्यतः ।		75
नृत्वा चाविद्वक्त्राभ्यां चार्या चैव मरालया ।	३०	
चतुर्थीं दिशमासाद्य तत्र स्थानं च मण्डलम् ।		
जनितं करणं तत्र सुलं चापि प्रचालयेत् ॥	३१	
दक्षिणः खटकः कर्णे वामो मुष्टिः स्वपार्श्वतः ।		
धनुःकर्षं स्थितावर्त्तचार्या तिर्यङ्मुखाख्यया ॥	३२	80
षष्ठीं दिशं समागत्य प्रत्यालीढाङ्गचालनम् ।		
तत्रैव चतुरस्रं च विप्रकीर्णीं सुलं तथा ॥	३३	
ततोऽर्धरेचिताभ्यां च चार्या तिर्यङ्मुखाख्यया ।		
पञ्चमीं दिशमासाद्य सुलं समनखं नयेत् ॥	३४	
शुद्धचालिं च तत्रैव कौक्कुटीमिति पाटतः ।		85
ततोऽञ्जलिकरं कृत्वा शिरोवदनदृत्कमात् ॥	३५	

देवं गुरुम् ऋषिं नत्वा चार्यां क्वातरया तथा ।

रङ्गमध्यमनुप्राप्य चार्यां ऽध्यर्द्धिकया समे ॥ ३६

तलपुष्पपुटं कृत्वा पुष्पाण्यापूर्य तत्र च ।

सव्यापसव्यतः पश्चादग्रादूर्ध्वात् क्रमादिति । ३७ 90

पुष्पाञ्जलिं दर्शयित्वा रङ्गपीठान्तरे क्षिपेत् ।

तत्रैवाभिनयेन्नान्दीश्लोकं तद्रागयोजितम् ॥ ३८

यथा—भवतां भूतये भूयाद् भवानी भववल्लभा ।

अङ्गीकृतसुसङ्गीतभृङ्गी^१ मुदितमानसा ॥ ३९

भवतां-पुरोदेशगतेन पताकेन, भूतये-पुरोदेशोर्ध्वोत्थिताभ्यामलपल्लवाभ्यां, 95

भूयात्—उद्वेष्टिताधोमुखगतेन पताकेन, भवानी-वामवक्षोरुहतटगतस्वसंमुखगो-
मुखेन, भव-ललाटगतस्रव्यास्येन । वल्लभा-हृदयगतचतुरेण । अङ्गीकृत-मुखस्थकपोतेन ।
सुसङ्गीत-मुखदेशगतहंसास्येन । ^२भृङ्गी-कम्पितपुरोदेशगतेन त्रिपताकेन । मुदित-
पुरोधस्तदूर्ध्वोत्थितेन^३ वामेनालपल्लवेन । मानसा-हृदयगतेन व्यावर्त्तितपरिवर्त्तित-
दक्षिणसंदर्शनेन ॥ 100

ततस्तत्रैव शीघ्रेण पार्श्वयोरग्रतः क्रमात् ।

कमलवर्त्तनिकामादौ मकरवर्त्तनिकां ततः ॥ ४०

मायूरीं भानवीं मैत्रीं हयलीलां मृगीं तथा ।

हंसीं च कुक्कुटो पश्चात् खञ्जनीं गजगामिनीम् ।

दर्शयेयुः क्रमात् तज्ज्ञाः संप्रदायानुसारतः ॥ ४१ 5

पताकौ मणिबन्धस्थौ शिथिलौ स्वस्तिकौ पुनः ।

मण्डलभ्रमितौ श्लिष्टौ ख्यातौ कमलवर्त्तनौ ॥ ४२

यदा तु मकरो हस्तपुरस्तात् पार्श्वयोरपि ।

व्यावर्तनाद् बहिश्चान्तस्तदा मकरवर्तना ॥ ४३

बहिर्बर्हकलाकारौ करौ कृत्वोर्ध्वतः क्रमात् ।

ज्ञनैरुच्चालितौ पादौ मायूरीस्फुरणं ततः ॥ ४४ 10

भानोर्गतिरिवालक्ष्ये हस्ताभ्यां मण्डलाकृतिः ।

सव्यापसव्ययोरूर्ध्वक्रियया भानवीगतिः ॥ ४५

हृदान्तःस्थितपाठीनो यथा वसति वीचिषु । पार्श्वयोरुभयोस्तद्वत्क्रियया <u>मैनवीगतिः</u> ॥	४६	15
पादपार्श्वयुगे स्थित्वा धरण्यां सञ्चरेद् द्रुतम् । मध्ये च स्थीयते तत्र गतिरुक्तानुरङ्गिणी ॥	४७	
चकिताक्षी कुरङ्गी च पश्यन्ती गीतपद्धतिम् । आकर्णयन्ती यदि सा हारिणीगतिरीरिता ॥	४८	
मरालीं च पुरस्कृत्वा भावहावादिपूर्वकम् । मन्मथोदीपना दृष्टिः कथिता हंसिनीगतिः ॥	४९	20
युगपत् स्फुरणात् पक्षपादयोः साचिमण्डले । मत्तकुक्कुटवद् यत्र कौक्कुटीगतिरीरिता ॥	५०	
त्रिपताकौ करौ कृत्वा 'जानू सङ्कुच्य शीघ्रतः । पादाग्रतश्चरित्वा' तु स्थीयते खञ्जनीगतिः ॥	५१	25
समपादेन च स्थित्वा मन्दं मन्दं चरेत् ततः । गम्भीरश्चाङ्गदृष्टिश्चेद् गजलीलागतिर्भता ॥	५२	
गतीनां सानुकूलत्वं भजेयुश्चरणादयः । ततोऽग्रे सव्यहस्ताङ्घ्री युगपत् क्रियया क्रमात् ॥	५३	
वैष्णवं च हयक्रान्तं प्रत्यालीढं ^१ च मोक्षणम् । कुर्यात् तदा वामहस्तशिखरो हृदि संस्थितः ॥	५४	30
पताकोऽधस्तलश्चान्यः स्वपार्श्वे च प्रसारितः । चित्रकलासकं तत्र मोक्षे सम्यक् प्रयोजनम् ॥	५५	
इति मुखचालिः ॥		
यतिताललयस्थानचारीहस्तात्मकं तु यत् ।		35
तन्नृत्तरूपं प्रोक्तं बुधैर्द्वादशधोदितम् ॥	१	
नेरिः करणनेरिश्च भिन्नं चित्रं च नत्रकम् ।		
अदृष्टपृष्ठतुल्लं च तोलरूपं च सीलुकम् ॥	२	
तुल्लं च प्रसरं चैव कर्तरी होलुनामकम् ।		
द्वादशेति समाख्याता, अथ लक्षणमुच्यते ॥	३	40

चतुरस्रे स्थितिर्यत्र रासतालश्चिरो लयः ।	
रथचक्रैकपादेन परेण च यथोचितम् ॥	४
गतिः पताकहस्तश्च प्रत्याशं तलसञ्चतः ।	
नीवीवद्गतिसञ्चारः क्रमात् सव्यापसव्ययोः ॥	५
रेखासौष्टवसंपन्नः स शुद्धो नेरिरुच्यते ।	45
उरुपेष्वपि सर्वेषु विना दृष्टकपृष्ठकम् ॥	६
ब्राह्मभ्रमरिकां बद्ध्वा मुक्तिः स्याच्चतुरस्रके ।	
छत्रभ्रमरिका किन्तु भवेत् करणनेरितः ॥	७

इति नेरिः ॥

झंपातालः सगोपुच्छो ^१ हस्तकोप्पलपल्लवः ।	50
पार्श्वोर्ध्वजानुनी दण्डपक्षं तलविलासितम् ॥	१
विद्युद्भ्रान्तं ततश्चन्द्रवर्चनामनि शुभितम् ।	
ललाटतिलकं पश्चात् लतावृश्चिकसंज्ञकम् ॥	२
नवभिः करणैरेभिः क्रमात् सव्यापसव्यतः ।	
कृत्वालीढे स्थितिर्यत्र नेरिः करणपूर्वकः ॥	३ 55

इति करणनेरिः ॥

यत्रानेकस्थितिः ब्रीडा गोपुच्छाद्यं ततः समा ।	
सबालमकरा लास्यशारी नूपुरपादिका ।	
त्रिसञ्चं ^२ सौष्टवं रेखा प्रत्याशं भिन्नमुच्यते ॥	१

इति भिन्नम् ॥

60

तिर्यङ्मुख्या प्रधानेन मध्ये काचिद् यथोचिता ।	
गतिः सबालककरस्त्रिपताकः ससौष्टवम् ^३ ॥	१
त्रिसञ्चेन पिपील्या च मल्लिकामोदतालतः ।	
शोभितं यत्र दिग्भावैश्चित्रं तत्स्थितिरीप्सिता ॥	२

इति चित्रम् ॥

65

मरालगतिका यत्र मध्ये गत्यान्ययान्विता ।	
समतालप्रयोगेण यतिभेदेन राजितम् ॥	१

- विचित्रभ्रमरो बालक्रीडासाधनचक्रवत् ।
स्थितिर्यथेप्सिता तद्दिग्भ्रमकं नत्रमुच्यते ॥ २
इति नत्रम् ॥ 70
- करिहस्तागतिर्यत्र काचिन्मध्ये यथेप्सिता ।
रच्चातालः सुयतिवान् 'मध्यमानेनावस्थितिः ॥ १
विचित्रचतुरो हस्तो दिक्षु सज्जनमोहनम् ।
अदृष्टपृष्ठपूर्वं तत् तुल्लं सद्भिर्निगद्यते ॥ २
इत्यदृष्टपृष्ठतुल्लम् ॥ 75
- काश्चित् तालानुपक्रम्य प्रयोगे बहुलद्रूतान् ।
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं सुमनोहरम् ।
२ध्रुवाडाख्यं च ३तज्ज्ञेयं तालरूपं विचक्षणैः ॥ १
तद् यथा ।
- हस्तबाहुङ्घ्रिभिः सव्यैर्वामयद्बाहुहस्तकैः । 80
षड्भिरङ्घ्रैश्चतुर्भिर्वा तालैस्तत्तन्मितोऽङ्गकैः ॥ १
समानमात्रलान्तैश्च द्रुतलध्वादिर्कैर्यदि ।
पूर्वं पूर्वं परित्यज्य त्वग्रिमाग्रिममाश्रितैः ॥ २
एकदा वान्यतालेन नृत्तं कुर्यान्नटाग्रणीः ।
चक्रबन्धं तदाख्यातं नृत्तविद्याविशारदैः ॥ ३ 85
इति चक्रबन्धः ॥
- तालानां तुल्यमात्राणां षण्णां⁴ दलधुरूपिणाम् ।
समद्विभागलान्तानां प्रत्येकं द्विदलं समम् ॥ १
कृत्वा तत्पूर्वपूर्वाद्धिं षट्सु स्थानेषु योजयेत् ।
चरमं चरमं धाद्धिं तत् तत् पूर्वं ततः क्रमात् ॥ २ 90
प्रयोजिते तदा ताला द्वादश प्रभवन्ति हि ।
चक्रबन्धवदन्यत् तु रविचक्रं भवेदिति ॥ ३
इति रविचक्रम् ॥
- चतुर्णामेव तालानां रविचक्रोक्तलक्षणम् ।
चतुःषु हस्तपादेषु पूर्वपूर्वदलं न्यसेत् ॥ १ 95

- तत् तत् फलदलं हस्तपादयोर्भेदवेन्मिथः ।
 सव्यापसञ्चयप्रोक्तस्य वस्तुतास्ता भवन्ति द्विः ।
 पञ्चबन्धमिति ख्यातं शेषं स्माद् रविचक्रवत् । २
 इति पञ्चबन्धम् ॥
- चतुर्णां तुल्यमात्राणां तालानां दलरूपिणाम् । 200
 समत्रिभाषलान्तानां प्रत्येकं तु पृथक् पृथक् ॥ १
 त्रिविभागान् क्रमात् कृत्वा कराद्द्विष्वथ योजयेत् ।
 स्वस्थाने च तृतीये च द्वितीये तालखण्डकान् ॥ २
 प्रतितालं क्रमान्यस्य नटो नृत्तं समाचरेत् ।
 नागबन्धं तदा प्रोक्तमन्यत् स्यात् पञ्चबन्धवत् ॥ ३ 5
 इति नागबन्धम् ।
- चतुर्णामेव तालानां पञ्चबन्धोक्तस्यङ्गम् ।
 स्थापयेत् पूर्वपूर्वार्धं पश्चार्धं च सम्भेन्मिथः ॥ १
 हस्तयोः पादयोस्तद्वस्ताइत्योरुभयोस्तथा ।
 सव्यापसञ्चयोर्हस्तपादयोः स्वाग्रतः क्रमात् । 10
 अन्यतालकृतं नृत्तं वृक्षबन्धं तदोदितम् ॥ २
 इति वृक्षबन्धतालरूपकम् ॥
- हंसपक्षकरो यत्र हंसलीलः कुलीरिका ।
 अन्या तदङ्गिनी काचित् प्रतिदिक्षु प्रसारणम् ॥ १
 वानरक्रीडिताकारं तलसञ्चेन सीलुकम् । 15
 तदेव जारमानाख्यं निमदन्त्यगरे जनाः ॥ २
 इति सीलुकम् ॥
- अश्लिष्टाख्या गतिर्यत्र काचिदन्तर्मनोहरा ।
 सक्षिप्रगजलीलश्च वर्त्तना पञ्चक्रोशयोः ।
 प्रतिदिक्षुस्थानकं तुल्यं तत् क्रमं जलकीटवत् । १ 20
 इति तुल्यम् ॥
- विलम्बितैकताली च हस्ताबाविद्ववक्रकौ ।
 पाष्णिरेचितिका चारी काचिन्मध्ये यथेप्सिता ।
 यत्र तत् प्रसरं प्रोक्तं स्थित्यादिकमनोहरम् ॥ १
 इति प्रसरम् ॥ 25

ऊरुवेणीगतिर्यत्र मध्येऽप्यन्या तदीप्सिता ।
 उरोवर्त्तितकौ हस्तौ सुलयो लघुशेखरः ।
 स्थितिदिग्भेदतो विद्युद्गतितवत् कर्तरी मता ॥ १

इति कर्तरी ॥

पश्चात्क्षिप्तावुरःक्षेत्राद् यत्र स्यातां लताकरौ । 30
 स्तम्भक्रीडनिका चारी मध्ये काचिद् यथोचिता ॥
 यतिलग्नः समुत्पाद्यः प्रत्याशं गतिचित्रितम् ।
 पलाशिगृध्रक्रीडा^१यास्तद्दोल्लुमिति कीर्तितम् ॥ २

इति होल्लु । इति द्वादश उरुपाणि ॥

आद्यन्ते भ्रमरी यत्र सुलूनां त्रितयं हृदि । 35
 भुजंगत्रासितामोक्षे तद्धुवाडः समीरितम् । १

अन्ते सर्वधुवाडानामन्तर्भ्रमरिका मता ।
 कलविकविनोदाख्यं^२ तार्क्ष्यं यक्षविलासितम् ॥ २

विद्युद्विलासितं वात्यावर्त्तितं रविसञ्चरम् ।
 नर्त्तनाभरणं तिर्यक्^३ताण्डवं रङ्गभूषणम् ॥ ३ 40

वादीशगजभैरूडं रोलंवांगविलासितम् ।
 पक्षिशार्दूलकं सिंहप्लुतकं द्वादशेति च ।
 इत्युद्धर्वाधःकृतं पूर्वं वक्ष्ये तल्लक्षणं क्रमात् ॥ ४

[लक्षणानि]

चक्रभ्रमरिनिःशङ्कौ डांडुहोरमयी क्रमात् ।
 यदोत्प्लुत्योक्तमोक्षश्चेत् कलविकविनोदकम् ॥ १ 45

चक्रभ्रमरिका यत्र होर्मयीडांडुकौ मतौ ।
 निःशङ्क उक्तन्यासः^४ स्यात् तार्क्ष्यपक्षविलासिते ॥ २

चक्रभ्रमरिकाडांडू निःशङ्को होर्मयी ततः ।
 यदा प्रागुक्तमोक्षः स्यात् तदा विद्युद्विला
 चक्रभ्रमरिहोर्मय्यौ ततो निःशङ्कडांडुकौ । 50

उक्तयुक्तिः क्रमाद् यत्र वात्यावर्त्तितकं च तत् ॥ ४

बाह्यभ्रमरिका पश्चाद् डांडुको होर्मयी ततः ।	
निःशङ्कश्चोक्तमोक्षोऽपि यत्र स्याद् रविसञ्चरः ॥	५
बाह्यभ्रमरिनिःशङ्कौ होर्मयीडाण्डुकौ ततः ।	
पूर्वोक्तमोक्षणं यत्र नर्चनाभरणं च तत् ॥	६ 56
बाह्यभ्रमरिका यत्र त्वडालुहोर्मयी ततः ।	
रायरङ्गालुरुक्तांत्यस्तत् तिर्यक् ताण्डवे भवेत् ॥	७
बाह्यभ्रमरिकांरायरंगालुहोर्मयी ततः ।	
अडालुरुक्तमोक्षश्च यत्र तद्रङ्गभूषणम् ॥	८
तिरपादिभ्रमर्यत्र डांडुश्चांडंतरस्ततः ।	60
वादीशगजभैरूडे होर्मयी चोक्तमोक्षकः ॥	९
तिरपाद्या भ्रमर्यत्र क्रमाद्दोर्मयिडांडुकौ ।	
रायरंगालुरुक्तान्त्यो रोलंबांगविलासिते ॥	१०
तिरपभ्रमरी चादौ त्वडालुडाण्डुकौ ततः ।	
निःशङ्क उक्तमोक्षोऽपि पक्षिशार्दूलकं हि तत् ॥	११ 65
तिरपभ्रमरी यत्र रायरंगालुडाण्डुकौ ।	
होर्मयी चोक्तमुक्तिः स्यात् तदा सिंहप्लुतं हि तत् ॥ १२	

इति द्वादश धुवाडानि ॥

इत्युक्ता लागवोऽन्येऽपि सुल्लपूर्वं पृथक् पृथक् ।	
एकावृत्त्या द्विरावृत्त्या कचिदन्येन वा सह ।	70
उत्प्लवन्ति नटा यत्र ते सर्वे विडुलागवः ॥	१
अडालू रायरंगालुर्निःशंको होर्मयी तथा ।	
डांडुश्चांडंतरोदिङ्ग रायादिः पक्षिसालुवः ॥	२
अलगढे किकावीसुस्तथासुंगरणं ततः ।	
कर्त्तर्यलागपूर्वौ द्वौ दिंडिकौ वाथ लक्षणम् ॥	३ 75
सुल्लं बद्ध्वा यदोत्प्लुत्य चरणौ पक्षिपक्षवत् ।	
भ्रामयित्वा पतेद् भूमौ तदा डालुस्तिरितिः ॥	४
सुल्लं बद्ध्वैकपादेन सहैवानुपतेद् दिवि ।	
द्वितीयोऽपि तदा रायरंगालुं तद्विदो विदुः ॥	५

सुल्लपूर्वं यदोत्प्लुत्य मिलितौ चरणौ समौ ।	80
दूरं भूमौ निपततः स निःशंकः प्रकीर्तितः ॥	६
यत्र स्वस्तिकमावर्त्य पादः पृष्ठगतो यदा ।	
लङ्घयेदङ्घ्रिणान्येन प्रोक्ता सा होर्मयी तदा ॥	७
पुरः प्रसार्य चरणं लङ्घयेदपराङ्घ्रिणा ।	
सुल्लपूर्वं तदा सङ्घ्रि 'डौ'दुरित्यभिधीयते ॥	८ 85
पुरतो ऽपिहितौ ^१ पादौ डांडुरेवाप्यनन्तरः ।	
उत्प्लुत्य चरणद्वन्द्वं वस्त्रनिःपीडनोपमम् ॥	९
परिश्राम्यावनीं याति तदिदं दिंडुमुच्यते ॥	
व्योम्नि निःशंकदिंडुभ्यां रायादिः षक्षिसालुवः ॥	१०
अधोमुखः ^३ समुत्प्लुत्य निपत्य पुरतो यदि ।	90
कुक्कुटासनमावध्य स्थिरश्चेदलगं तदा ॥	११
समौ पादौ यदान्यस्मि ^४ न्याश्वे त्वपरपाश्वरतः ।	
उत्प्लुत्य पातयेच्चित्रं तदा ढेकीति कथ्यते ॥	१२
भूमावेकं समास्थाय द्वितीयं पूर्ववद् यदा ।	
पातयेच्चरणौ व्योम्नि तं बीसं मुनिरब्रवीत् ॥	१३ 65
संहतात्पुरमुत्प्लुत्य तनुवृत्त्या पराङ्मुखः ।	
महीतले यदासीनो मुंगरणं कुक्कुटासने ॥	१४
तमेव विपरीतेन हिंगरणं केचिदूचिरे ।	
होर्मयीकर्त्तरीपूर्वं कार्तरी दिंडुमुचिरे ॥	१५
गगने लगदिंडुभ्यामुच्यते लगदिंडुकः ॥	१६ 300
इत्यादि बहवो भेदा सन्ति ते बिडुलागवः ।	
लोकवृत्त्यानुसारेण ज्ञातव्यास्ते यथोचिताः ॥	१७

इति बिडुलागवः ।

बाह्यान्तस्तिरपच्छत्रचक्राद्या भ्रमरिका यथा ।

दक्षिणेणाङ्घ्रिणा स्थित्वा वाममङ्घ्रिं च कुञ्चयेत् ।

5

वामावर्त्तं भ्रमेद् यत्र सा बाह्या भ्रमरी मता ॥

१

एतस्यास्तु विपर्यासादन्तर्भ्रमरिका भवेत् ।		
तिरपभ्रमरी तिर्यक् द्वावङ्घ्री स्वस्तिकात् परम् ॥	२	
त्रिविक्रमाकारधारि स्थानमास्थाय यत्र तु ।		
वामावर्त्त भ्रमेदाहुस्तां छत्रभ्रमरीं बुधाः ॥	३	10
चक्रभ्रमरिकास्वण्डसूच्यद्धे चक्रवद्धमात् ।		
अन्याश्च काश्चिद् विज्ञेया भ्रमर्यो लोकवृत्तितः ॥	४	

इति भ्रमर्यः ।

तालधारिण्यभिव्यक्तं तादिकं वर्णसञ्चयम् ।		
समुच्चरति षड्गादिभ्रगणादिगणान्वितम् ॥	१	15
चतुरस्रं समाधाय विधाय शिखरं करम् ।		
नाभावेकमुरोदेशादपरं पुरतः परम् ॥	२	
पताकहस्तकाद्यन्यतमं कुर्यात् प्रयत्नतः ।		
आद्यशब्दाक्षरोत्पत्तिहेतुकं सुभगं ततः ॥	३	
एकपादं पुरासूचीपरं चरणमञ्चितम् ।		20
पश्चाद्गत्याथ तं हस्तं तत्तत्करसमं यदा ॥	४	
व्यावर्त्तयेत् तमेवाङ्घ्रिं नयेत् पश्चात् तथापरम् ।		
गात्रमात्रस्वरानङ्गैर्भावलोचनचेष्टितैः ॥	५	
पादाभ्यां दर्शयेत् तालं लयाच्छब्दाक्षराप्यलम् ।		
नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं नृत्तवद्भिरुदीरितम् ॥	६	25

इति शब्दनृत्तम् ॥

यस्य गीतस्य यो रागस्तस्य यः स्याद् ग्रहस्वरः ।		
षड्गादन्यतमः सोऽत्राभिनेयो हस्तकेन तु ॥	१	
दक्षिणेनालपद्मेन वामेन चतुरेण च ।		
परिमण्डलितेनाथ मयूरललितेन च ।		30
एवं विनिर्दिशेत् षड्गं लक्ष्यलक्षणकोविदैः ॥	२	
हंसास्याभिधहस्तेन दक्षिणेनेतरेण तु ।		
कटिस्थेनार्द्धचन्द्रेण समेन शिरसा तथा ।		
ब्रह्माख्यस्थानकेनापि भीमान् रिषभ्यादिशेत् ॥	३	

- शुक्रतुण्डेन हस्तेन दृष्ट्या करुणया तथा । 35
 अधोमुखेन शिरसा ¹त्वश्वक्रान्ताभिधेन च ।
 चार्याप्युचितया धीमान् गान्धारं स्वरमादिशेत् ॥ ४
²पाताकौ स्वस्तिकौ कृत्वा शिरसा विधुतेन च ।
 शैवाख्यस्थानकेनापि कटीच्छिन्नेन चापुनः ।
 दृष्ट्या च हास्यया धीरोऽभिनेयो मध्यमस्वरः ॥ ५ 40
 कृत्वालपल्लवौ हस्तौ धुतेन शिरसा तथा ।
 एवं विनिर्दिशेद्भीमान् स्वरं पञ्चमसंज्ञकम् ॥ ६
 काङ्गलहस्तकौ कृत्वा दृष्ट्या बीभत्सया तथा ।
 परावृत्तेन मूर्ध्ना च प्रत्यालीढाभिधेन च ।
 स्थानकेन विनिर्दिष्टो धैवतो निपुणैर्नटैः ॥ ७ 45
 [.] हस्तेन करिहस्तेन लीलया
 दृष्ट्या विधूतशिरसा निषादं संनिरूपयेत् ॥ ८
 इति स्वराभिनयः ॥
- इहोदितस्य दिक्स्थानकरणैश्च निरूपितैः ।
 समस्तैरथवा व्यस्तैस्तत्कारानुरोधतः ॥ १ 50
 यत्र तालयुजा यत्या तन्नृत्यं सुमनोहरम् ।
 ततः शब्देन तदनुद्ग्रहेण च ततः पुनः ॥ २
 शब्देन तेनकैशब्दखण्डेन ध्रुवकेन च ।
 पुनः शब्देन तदनु यतिगीतेन नर्त्तनम् ॥ ३
 हावभावादिसुलयतालादिगतिसङ्गतम् । 55
 यदोल्लासलसद्गात्रं पात्रमारचयेत् तदा ।
 स्वरमञ्चकनृत्यं स्याल्लक्ष्यवेदिमनोहरम् ॥ ४
 इति स्वरमञ्चनृत्यम् ॥
- गीततानग्रहसमं समुचरति तादिकम् ।
 पूर्ववद्वर्णसंघातं तालधारिणि हारिणि ॥ १ 60
 येन येनेह गीतेन नृत्येत् पात्रं ससौष्टवम्³ ।
 तत्तन्नृत्यं बुधैर्देश्यं तत्तन्नामपुरःसरम् ॥ २

स्थाप्यादिवर्णानङ्गेन भावान् नेत्रादिरागतः । हस्तैरभिनयेदर्थान्' ² तत्तद्वाक्यसमुद्भवान् ॥	३	
तालग्रहानङ्घ्रिपदैः समादिश्च यथोचितम् ।		65
अनेनैव प्रकारेण गीतनृत्तं समाचरेत् ॥	४	
एलादयः शुद्धसूडावर्णाद्यालिक्रमास्तथा ।		
श्रीरङ्गाद्या विप्रकीर्णास्तथा सालगसूडकाः ॥	५	
तथान्येऽपि प्रसिद्धाश्च' त्वप्रसिद्धा यथोचिताः ।		
सार्थाङ्गं नृत्यवन्तृत्येन्निरर्थाङ्गं तु नृत्तवत् ॥	६	70

इति गीतनृत्यम् ॥

देशी द्राविडदेशस्य चिन्दुरित्यभिधीयते ।		
तत्पौढा दृश्यते शुद्धचिन्दुश्च बिन्दुचिन्दुकः ॥	१	
तिरुवणी चिन्दुको माला चिन्दुकः कोलचारिष्कः ।		
गीतमुद्रादिकश्चिन्दुरिति तल्लक्षणं यथा ॥	२	75
यत्रोद्ग्राहध्रुवपदो बद्धो द्राविडभाषया ।		
तच्छुद्धचिन्दुकः प्रोक्तो मेलापाभोगवर्जितः ॥	३	

इति शुद्धचिन्दुः ॥

यत्रोद्ग्राहं च मेलापं सकृद् गीत्वा ततो ध्रुवम् ।		
प्रभुनामाङ्कितं द्वित्रिविरामाढ्यं मुहुर्मुहुः ।		80
गीत्वा ध्रुवेषु मोक्षः स्याच्चेत् तदा बिन्दुचिन्दुकः ।	१	

इति बिन्दुचिन्दुः ॥

नेतृनामाङ्कितौद्ग्राहस्तन्मानात् सार्धकध्रुवः ।		
एतद् द्वयं मुहुर्गायेत् तदा तिरुवणिं विदुः ॥	१	
इति तिरुवणिचिन्दुः ॥		85
अनियतपादभागे माला मालादिचिन्दुकः ॥	१	

इति मालाचिन्दुः ॥

यत्र पाटाक्षरालापस्ततो वाक्यमतात्मकम् ।		
पदरागसमुदीप्तं तत्कथाबीजसूचकम् ॥	१	

ततश्च चिन्द्रवः पञ्च सप्त वा मध्यमध्यतः ।	90
पिल्मिरूकैमिरूम्यकलासैरिति चित्रितम् ॥	२
शास्त्रसङ्गकथावृत्तिश्चेत् तदा कोलचास्का ।	
अन्यत्कथाप्रवृत्तिश्चेत् तदा कट्टेण चिन्दुकः ॥	३
इति कोलचारीचिन्दुः ॥	
गीतवद्गीतमुद्रादिचिन्दुको ऽष्टविधः स्मृतः ।	95
मेलापकान्तराभोगसमस्तव्यस्तहीनतः ।	
द्वित्रिश्चतुःपञ्चधा तु चिन्द्रवः परिकीर्तिताः ॥	१
यदि प्रयोगे मेलापे क्वचित् प्रयोगको ध्रुवे ।	
तदोद्ग्राहे च मुक्तिः स्याद् यदि प्रयोगकोऽन्तरे ।	
तदा तु ध्रुवके भोक्ष एवं न्यासस्तु सर्वदा ॥	२ 400
इति गीतमुद्राचिन्दुः ॥	
स्यन्द्यपस्यन्दिताध्यधिस्थितावर्त्तादिमुख्यतः ।	
वैशाखमण्डलालीढप्रत्यालीढादिभिस्तथा ॥	१
रेखा ^१ सौष्टवलास्याङ्गैः शिरोऽङ्घ्रिकररेचकैः ।	
भावहावविलासैश्च सुल्लचित्रकलासतः ॥	२ 5
चारुपाटानुगं चंचत्किङ्किणीध्वनिपेक्षलम् ।	
तत्तज्जातियुतं वेपभाषासाहित्यशोभितम् ।	
संप्रदायानुसरणं चिन्दुनृत्यं समाचरेत् ॥	३
यत्र किङ्किणिकावाद्यैराहतिर्घर्षरो ^२ मतः ।	
पिडिवाटः शिरिपिडी पटवो लगपाटकः ।	10
शिरितिरः खलुखलुश्चेति घर्षरः षड्विधो मतः ॥	४
दिशानयापरे ऽप्युह्या घर्षराः शोभयान्विताः ।	
सर्वे घर्षरभेदास्ते कार्यास्तालानुगामिनः ॥	५
इति चिन्दुनृत्यम् ॥	
तैलङ्गभाषया बद्धा तूद्ग्राहाभोगवर्जिता ।	15
सा धरू कथिता धीरैः सा द्विधा परिकीर्तिता ॥	१
मुख्या तु कट्टिधरू तथा मुक्तधरू परा ।	
कट्टिर्ध्वन्पर्यायस्त्वादौ तत्क्रममुच्यते ॥	२

अर्द्धिके ^{४२} वाद्यमानेऽपि यत्र पात्रं धृताञ्चलम् ।		
रङ्गं प्रविश्य तत्रादावालापेन तु नर्त्तनम् ॥	१	20
तत्तत्करादिभिः पाटैर्लयतालसमन्वितम् ।		
धात्वादिरहितं गीतमालापः परिकीर्तितम् ॥	२	
ततः स्यात् ससुल्लुतुङ्गलास्याङ्गैश्च समन्वितम् ।		
विचित्रचरणं साक्षाद्रागमूर्त्तिरिवाङ्गकैः ॥	३	
दर्शयन् पिल्मुरूकैर्मुर्वादिभिर्मध्यमध्यतः ।		25
त्रिचतुःपञ्चषट्सप्तधरूभिः सह पट्टिभिः ।		
भावहावसुलास्याङ्गनर्त्तनं तनुयान् नटी ॥	४	
विलम्बितोच्चारमानं यदेकयतिसुन्दरम् ।		
अतालं पदमेकं चेद् बद्धः कर्णाटभाषया ।		
सा पट्टिः कथिता ^{४३} तज्ज्ञै रसिकानन्ददायिनी ॥	५	30
ततः कलासतो रम्यैर्द्रुतमानस्वरैः पुनः ।		
कैमुरूशब्दतः पश्चाच्चित्रं नर्तनमाचरेत् ॥	६	
तालं तन्त्रीमृदङ्गानां समन्तान्मेलनं यदा ।		
नर्माङ्गं नर्त्तनं यत्र सुलुपं तन्निगद्यते ॥	७	
तालतुल्यसुल्लुतुङ्गधर्षरध्वनिपेशलम् ।		35
पुनः कलासशब्देन द्विरावृत्तिपदेन च ॥	८	
विधाय नर्त्तनं त्वर्द्धिनाम्नि न्यासं समाचरेत् ।		
तदा कट्टि नृत्यं स्याद् देशी तैलङ्गदेशजा ॥	९	
नमनोन्नमनं तुङ्गमूर्ध्वाधः सौष्ठवस्य च ।		
चतुर्विरामकैर्बद्धैः पदैरुद्ग्राहनिर्मितम् ॥	१०	40
तालेन येन केनापि युतं तत्पदसंज्ञकम् ।		
एतदुक्ते विपर्यासाद्वा धरूकट्टिर्दिर्मता ॥	११	
इति कट्टिधरू ।		
धरूपूर्वाधिके यत्र पिल्मिरू संप्रयुज्य च ।		
पुनः पूर्वाधिकं पश्चाच्चरमं नृत्यमाचरेत् ॥	१	45

तालस्य लयभेदेन कतिवारं तु नर्तयेत् ।	
अथवान्यधरूपपूर्वपूर्वाः हुंनतरा परा ।	
तालद्रुतलयोऽप्यत्र सां प्रोक्ता मुक्तिकाधरू ॥	२
इति मुक्तिकाधरू । धरूनृत्यम् ।	
गीर्वाणमध्यदेशीयभाषासाहित्यराजितम् ।	50
त्रिचतुर्वाक्यसंपन्नं ररनारीकथाश्रयम् ^{४४} ॥	१
शृङ्गाररसभावाढ्यं रागतालपदात्मकम् ।	
पादान्तानुप्रासयुतं पादान्तयमकं तथा ॥	२
प्रतिपादं यत्र बद्धमेवं पादचतुष्टयम् ।	
उद्ग्राहध्रुवकाभोगान्तरध्रुवपदं स्मृतम् ॥	३ 55
गीयमाने ध्रुवपदे हावभावमनोहरे ।	
नर्तनं तनुयात् पात्रं कान्तादृष्ट्यादिसन्मुखम् ॥	४
नानागतिलसद्भावं लसल्लास्याङ्गसुन्दरम् ।	
पदान्तरान्तरागा यद् दन्तोद्योतितरङ्गकम् ॥	५
खण्डमानेन रचितं मध्ये मध्ये च कम्पनम् ।	60
सर्वाभिनयसंपन्नं रेखालावण्यशोभितम् ॥	६
तदा ध्रुवपदं नृत्यं मुखरागविभूषितम् ।	
स्यादक्षिभ्रूविकारादिशृङ्गाराकृतिसूचकः ।	
सश्रीवरेचको हावो भावश्चित्तसमुद्भवः ॥	७
इति ध्रुवपदम् ॥ इति निबन्धनृत्यम् ॥	65
अथानिबन्धनृत्यस्य क्रमं वक्ष्यामि लोकरः ।	
नामावली यतिर्नेरिर्नेरिः सालङ्गपूर्वकः ॥	१
सङ्कीर्णनेरिर्भावादिर्नेरिश्च नडनेरिः ।	
कैवर्तेनं मुरुरद्वे मुरू च तालरूपकम् ।	
गुण्डालं कमलं मण्डी मुडुपं च पुरण्डी ॥	२ 70
कुडुपं तिर्यकरणं लावणी चटुकं ततः ।	
नानादेशोद्भवा देशी तत्तद्विक्शास्त्रता इति ॥	३
[लक्षणानि]	
यथाभिनयसंपन्नं विचित्रगतिसुन्दरम् ।	

- तीवटिग्रहभेदेन लयतालसमन्वितम् । 75
नामावली नृत्तमिदं नृत्येज्जनमनोहरम् ॥ १
इति नामावली ॥
- विरामसाम्यगतिभिर्लागैर्नामनोहरैः ।
लयतालविचित्राङ्गैर्यतिनृत्तं समाचरेत् ॥ १
इति यतिः ॥ 80
- आदितालानुगं यत्र विलम्बितलयान्वितम् ।
विचित्रगतिसंपन्नं सामान्या नेरिरिष्यते ॥ १
[इति नेरिः]
- सा एवायुतसंयुक्तहस्तैः सालङ्गनेरिका ॥ १
[इति सालङ्गनेरिः] 85
- युक्तायुक्तैर्नृत्तहस्तैः सङ्कीर्णा नेरिरुच्यते ॥ १
[इति संकीर्णनेरिः]
- रसभावाङ्गदृष्ट्याद्यैर्भावनेरिः प्रकथ्यते ॥ १
[इति भावनेरिः]
- स एव द्रुतमानेन नडनेरिरिति स्मृता ॥ १ 90
[इति नडनेरिः]
- मणिबन्धयुतौ हस्तौ भ्रामयेत् सविलासकम् ।
सव्यापसव्ययोर्यत्र तद्योग्यगतिमुन्दरम् ।
विदध्यान्नर्त्तनं सम्यक् तदा कैवर्त्तनाभिधम् ॥ १
[इति कैवर्त्तनम्] 95
- यत्राङ्गं मोटयेत् तिर्यग् विक्षिप्ताक्षिप्तकौ मुहुः ।
त्रिपताकौ पुरा पात्रं सा मुरु कथ्यते बुधैः ॥ १
[इति मुरु]
- उत्कटस्थो नटो गात्रं मोटयेद् द्रुतमानतः ।
वपुः पुनः पुनर्यत्र मुरुकं रट्टपूर्वकम् ॥ १ 500
[इति रट्टमुरु]

- किञ्चित्तालसुपक्रम्य प्रयोगे बहुलद्रुतम् ।
 संकीर्णनिकगतिभिः प्रवृत्तं तालरूपकम् ॥ १
 [इति तालरूपकम्]
- जङ्घाया बाह्यमन्तर्यद्विदधद्भ्रमण द्रुतम् । 5
 तालानुगति नृत्तं चेद् गुण्डालं कथितं तदा ॥ १
 [इति गुण्डालम्]
- बहुभिर्बाहुभेदैश्च सालपल्लववर्त्तनैः ।
 कटीपा^२र्वशिरोरेख^४पूर्वकं कमलं तदा ॥ १
 [इति कमलम्] 10
- पृष्ठाग्रसारिताभ्यां चेत् पादाभ्यां नतजानुकम् ॥ १
 [इति नतजानुकम्]
- पर्यायान्तर्तनं कुर्यात् तदा मण्डीति कीर्तिता ॥ १
 [इति मण्डी]
- यदा मुडुपचारीभि^४नृत्येत् तालानुरोधतः । 15
 तदा मुडुपमित्युक्तं विचित्रगतिरञ्जितम् ॥ १
 [इति मुडुपम्]
- मुडुपस्थो नटो यत्र विधाय भ्रमरीं पुनः ।
 पुनर्मुडुपमानृत्य नृत्येच्चेत् सा मुरण्डरी ॥ १
 [इति मुरण्डरी] 20
- कुञ्चिताङ्गुलिना यत्र प्रसृताङ्गुष्ठकेन चेत् ।
 प्रसार्य जङ्घिकां कम्पं विचित्रद्रुतमाचरेत् ॥
 घर्घरीभिः समायुक्तं तदैतत् कुडुपं मतम् ॥ १
 [इति कुडुपम्]
- कञ्चित्करणमास्थाय विदध्याद्भ्रमरीं यदा । 25
 अवसाने पुनः कञ्चित्करणं समुपाश्रयेत् ।
 एवं मुहुमुहुयत्र करणं तिर्यपूर्वकम् ॥ १
 [इति तिर्यकरणम्]

समपादे स्थितं पात्रं कटिन्यस्तार्धचन्द्रकम् ।
कटेरुपरि तत्कायं भ्रामयेल्लावणी तदा ॥

१ 30

[इति लावणी]

जानुभ्यां भूमिलग्नाभ्यां पद्भ्यां वा मण्डलाकृतिः ।
नम्रपृष्ठं लताहस्तौ पात्रं भ्रमणमाचरेत् ।
तदासौ चटुरित्युक्तः सूर्यमण्डलवद्गतिः ॥

१

[इति चटुः]

35

इत्यनिबद्धोरूपाणि ॥

यावनीभाषया युक्तं यत्र गीतं धृताञ्चलम् ।
कल्लादिगजराद्युक्तं कृत्याहगेन भूषितम् ॥

१

विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रयविचित्रितम् ।
कोमलाङ्गैर्यदा नृत्यं भ्रमर्यादिविराजितम् ॥

२

40

सशब्दा च क्रिया यत्र ध्रुवशम्यादिभेदतः ।
यत्र चेष्टाविरहितं तन्नृत्तं जक्कडी मतम् ॥

३

पारसीकैः पण्डितैस्तूद्ग्रहादिस्वरभाषया ।
तद् गीतं जक्कडीसंज्ञं यवनानामतिप्रियम् ॥

४

[इति] जक्कडी ॥

45

मुरजादिषु वाद्येषु वाद्यमानेषु वादकैः ।
कुतूहलाय भूपानां वसन्ताद्युत्सवेषु चेत् ॥

१

क्रमाच्चत्वारि पात्राणि यद्वाष्टौ षोडशाथ वा ।
द्वात्रिंशद्वा चतुःषष्टिः सन्धीभूय वियुज्य च ॥

२

प्रनृत्यन्ति समादाय दण्डकौ पाणिपङ्कजैः ।
अङ्गुष्ठसम्मिता स्थौल्ये दैर्घ्ये च षोडशाङ्गुलैः ॥

३

50

स्वर्णादिधातुबद्धान्तौ सरलौ वर्तुलौ दृढौ ।
चित्रितौ वर्णकैर्ग्रन्थिवर्जितौ मसृणौ तथा ॥

४

तत्तद्देशानुसारेण धृत्वा वा दण्डचामरे ।		
दण्डक्षौमाञ्चले यद्वा दण्डकालुरिकेऽथवा ॥	५	55
चतुर्भिः प्रश्चभिर्घातैर्यद्वा षड्भिः प्रहारकैः ।		
सशब्दघातभेदैश्च पुरतः पृष्ठतोऽपि च ॥	६	
पाश्वर्ययोरुभयोस्तद्वद् घातभेदैस्ततः परम् ।		
चारीभिर्भ्रमरीभिश्च चित्रैस्तैर्वासव्यतः ॥	७	
असकृन्मण्डलीभूय गीतताललयानुगम् ।		60
तदोदितं बुधैर्दण्डरासं जनमनोहरम् ॥	८	
दण्डैर्विना कृतं नृत्यं रासनृत्यं तदेव हि ॥	९	
इति रासनृत्यम् । इत्यनिबन्धनृत्तम् ।		



श्लोकपङ्क्त-अनुक्रमाणका

[The first figure indicates the page number and the second figure the line number.]

अग्रतः क्षेपणाद्	२	२५	इत्युक्ता लागवेऽन्येऽपि	११	२६९
अङ्गीकृतसुसङ्गीतभङ्गी	५	९४	इत्युद्दिष्टं बन्धकस्य	२	२०
अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुल्यौ	३	४६	इत्युद्घर्षाधिःकृतं पूर्वं	१०	२४३
अङ्गुष्ठसम्मिता स्थौल्ये	२१	५५१	इत्यादि बहवो भेदा	१२	३०१
अडालुक्कमोक्षश्च यत्र	११	२५९	इतस्ततोऽर्थपर्याय इङ्गने	२	३१
अडालु रायरंगालुर्निःशंको	११	२७२	इष्टार्थं क्रियते	२	२८
अथवाऽह्निफणाकारां	३	४०	इहोदितस्य दिक्स्थान	१४	३४९
अथवान्यधरूपपूर्वपूर्वाः	१८	४४७	उत्कटस्थो नद्यो	१९	४९९
अथानिबन्धनृत्यस्य	१८	४६६	उक्तमुक्तिः क्रमाद् यत्र	१०	२५१
अदृष्टपृष्ठतुल्लं च तोलरूपं	६	१३८	उत्प्लवन्ति नटा यत्र	११	२७१
अदृष्टपृष्ठपूर्वं तत	८	१७४	उत्प्लुत्य चरणद्वन्द्वं	१२	२८७
अधस्तलपताकश्च बाहुस्तत्र	३	५१	उत्प्लुत्य पातयेच्चित्रं	१२	२९३
अधोमुखेन शिरसा	१४	३३६	उद्ग्राहध्रुवका भोगान्तर	१८	४५५
अधोमुखः समुत्प्लुत्य	१२	२९०	उद्वंष्टितेन वामेन	४	६५
अन्ते सर्वधुवाडानामन्तश्चमरि	१०	२३७	उरुपेष्वेपि सर्वेषु	७	१४६
अन्यत्कथाप्रवृत्तिश्चेत् तदा	१६	३९३	उरोवर्तितकौ हस्तौ	१०	२२७
अन्यतादृकृतं नृत्तं	९	२११	ऊर्ध्वाध्वाङ्गं यथा	४	७०
अन्याश्च काश्चिद् विज्ञेया	१३	३१२	ऊरुवैणी गतिर्यत्र मध्येऽप्य	१०	२२६
अन्या तदङ्गिनी काचित्	९	२१४	एकदा वान्यतालेन	८	१८४
अनिबन्धं त्वनियमाद्	२	१५	एकपादं पुरासूचीपरं	१३	३२०
अनियतपादभागे माला	१५	३८६	एकावृत्या द्विरावृत्या	११	२७०
अनेनैव प्रकारेण गीतनृत्त	१५	३६६	एतद् द्वयं मुहुर्गायित्	१५	३८४
अतालं पदमेकं चेद्	१७	४२९	एतदुक्ते विपर्यासाद्वा	१७	४४२
अर्दिके वाद्यमानेऽपि यत्र	१७	४१९	एतस्यास्तु विपर्यासादन्त	१३	३०७
अलग्ने किंकाबीसुस्तथा	११	२७४	एलादयः शुद्धसूडावर्णा	१५	३६७
अवसाने पुनः	२०	५२६	एवं मुहुर्मुहयत्र	२०	५२७
अश्लिष्टाख्या गतिर्यत्र	९	२१८	एवं विनिर्दिशेद्धीमान्	१४	३४२
असकृन्मण्डलीभूयगीतताल	२२	५६०	एवं विनिर्दिशेत्	१३	३३१
आकर्णयन्ती यदि	६	११९	कटिस्थेनाधचन्त्रेण समेन	१३	३३३
आदितालानुगं यत्र	१९	४८१	कटीपार्श्वशिरोदेशपूर्वकं	२०	५०९
आद्यन्ते भ्रमरी यत्र	१०	२३५	कटेरुपरि तत्कार्यं	२१	५३०
आद्यशब्दाक्षरोत्पत्तिहेतुकं	१३	३१९	कटिर्बिबन्धपर्यायस्त्वादौ	१६	४१८
आविद्धवक्त्रहस्ताभ्यां चार्या	३	३३	कञ्चित्करणमास्थाय	२०	५२५

कमलवर्त्तनिकामादौ	५	१०२	गीतमुद्रादिकश्चिन्दुरिति	१५	३७५
कर्त्तर्यलागपूर्वौ द्वौ	११	२७५	गीततानग्रहसमं समुच्चरति	१४	३५९
करिहस्तकया चार्था	४	६४	गीतषट्गीतमुद्रादिचिन्दुको	१६	३९५
करिहस्तागतिर्यत्र काचिन्मध्ये	८	१७१	गीयमाने ध्रुवपदे	१८	४५६
कलषिकविनोदारुयं	१०	२३८	गीर्वाणमध्यदेशीयभाषा	१८	४५०
कलादिगजराद्युक्तं कृत्य	२१	५३८	गुण्डालं कमलं मण्डी	१८	४७०
काङ्गलहस्तकौ कृत्वा	१४	३४३	घर्घरीभिः समायुक्तं	२०	५२३
काञ्चिन् तालानुपक्रम्य	८	१७६	चकिताक्षौ कुरङ्गी	६	११८
किञ्चित्तालमुपक्रम्य प्रयोगं	२०	५०२	चक्रबन्धं तदारुयातं	८	१८५
कुक्कुटासनमाबध्य स्थिरः	१२	२९१	चक्रबन्धवदन्यत्	८	१९२
कुडुकस्यां ततश्चा	२	५	चक्रभ्रमरिकाखण्डसूच्यङ्गे	१३	३११
कुडुपं तिर्यकरणं लावणी	१८	४७१	चक्रभ्रमरिकाडांडं निःशङ्को	१०	२४८
कुतूहलाय भूपानां	२१	५४७	चक्रभ्रमरिका यत्र	१०	२४६
कुञ्जाताङ्गुलिना यत्र	२०	५२१	चक्रभ्रमरिनिःशङ्को डांडु	१०	२४४
कुर्यान् तदा वामहस्तशिखरो	६	१३१	चक्रभ्रमरिहोर्मय्यो ततो	१०	२५०
कैमुरुशब्दतः पञ्चाच्चित्रं	१७	४३२	चतुर्णां तुल्यमात्राणां तालानां	९	२००
कोमलाङ्कुर्यदा नृत्य	२१	५४०	चतुर्णामिव तालानां पद्मबन्धो	९	२०७
कृत्वा तत्पूर्वपूर्वाङ्गं	८	१८९	चतुर्णामिव तालानां रघिञ्चक्रो	८	१९४
कृत्वालपल्लवो हस्तौ	१४	३४१	चतुर्थीं दिशमासाद्य	४	७७
कृत्वालीढे स्थितिर्यत्र	७	१५५	चन्द्रप्रिनेत्रवाराण्ट	२	२३
कैवर्तनमुरुरट्टे	१८	४६९	चतुर्भिः पञ्चभिर्घातैर्यद्वा	२२	५५६
क्रमाच्चन्वारि पात्राणि	२१	५४८	चतुर्विरामकैर्वद्भिः पदैरुद्ग्राह	१७	४४०
खण्डमानेन रचितं मध्ये	१८	४६०	चरमं चरमं वार्द्धं	८	१९०
गगने लगदिन्दुभ्यामुच्यते	१२	३००	चतुरस्रे स्थितिर्यत्र	७	१४१
गणेशं भरतं	२	८	चतुरस्रौ करो	३	५७
गत्यादिनियमैर्युक्तं	२	१४	चतुरस्रं समाधाय	१३	३१६
गतिं च सर्वदा	३	४९	चतुःषु हस्तपादेषु	८	१९५
गतिः पताकहस्तश्च	७	१४३	चार्याप्युचितया धीमान्	१४	३३७
गतिः सबालककरञ्जिपताकः	७	१६२	चार्या साय्या सव्यसूची	३	५०
गतीनां सानुकूलत्वं	६	१२८	चारीभिर्भ्रमरीभिश्च	२२	५५९
गम्भीरश्चाङ्गदृष्टिप्रबेद	६	१२७	चारुपाटानुगं चंचत्-	१६	४०६
गात्रं तदनुसारेण	३	४२	चित्रकलासकं तत्र मोक्षे	६	१३३
गात्रमात्रस्वरानङ्गैर्भावलोचन	१३	३२३	चित्रितौ घणकैर्ग्रन्थिष्वजितौ	२१	५५३
गीन्वा ध्रुवेषु मोक्षः	१५	३८१	छत्रभ्रमरिका किन्तु	७	१४८



जङ्घाया बाह्यमस्त	२०	५०३	तदासौ चटुरित्युक्तः	२१	५३४
जनितं करणं तत्र	४	७८	तदा तु ध्रुवके	१६	४००
जानुभ्यां भूमिलग्न्याभ्यां	२१	५३२	तदा ध्रुवपदं नृत्यं	१८	४६२
ज्येष्ठाश्च ये	२	९	तदा मुहुपमित्युक्तं	२०	५१६
शंपातालः सगोपुच्छो	७	१५०	तदेव जारमानाख्यं	९	२१६
डांडुश्चाडंतरोदिहू	११	२७३	तदोदग्राहे च मुक्तिः	१६	३९९
तच्छुद्धचिन्दुकः प्रोक्तो	१५	३७७	तदोदितं बुधैर्दण्डरासं	२२	५६१
तत्तज्जातियुतं वैषभाषा	१६	४०७	तन्नुत्तमरूपं प्रोक्तं	६	१३६
तत्तन्नुत्वं बुधैर्देश्यं	१४	३६२	तमेव विपरीतेन	१२	२९८
तत्कमं नृत्ततन्वहः	४	७४	तलपुष्पपुटं कृत्वा	५	८९
तत्पोढा दृश्यते शुद्धचिन्दुश्च	१५	३७३	तलमध्येर्ध्वसञ्चाल्याः क्रमेण	३	४५
तत् तन् परदलं	९	१९६	तलसञ्चमनुप्राप्य	३	४३
तत्तत्करादिभिः पाटैर्लयताल	१७	४२१	तालग्रहान्ङ्घ्रिपदैः समादिश्च	१५	३६५
ततोऽधरेचिताभ्यां	४	८३	तालतुल्यसुलूतुङ्गप्रर्ध्वनि	१७	४३५
ततोऽञ्जलिकरं कृत्वा	४	८६	तालद्रुतलयोऽप्यत्र सा	१८	४४८
ततोऽग्रे स्वयदस्ताङ्घ्री	६	१२९	तालधारिण्यभिव्यक्तं तादिकं	१३	३१४
तत्तद्देशानुसारेण ध्रुवा	२२	५५४	तालस्य लयभेदेन	१८	४४६
ततस्तत्रैव शीघ्रेण	५	१०१	तालानां तुल्यमात्राणां	८	१८७
ततस्तु तलसञ्चेन	३	५६	तालानुगतितृत्तं चेद्	२०	५०६
ततस्तु मध्यसञ्चेन	३	५३	तालेन येन केनापि	१७	४४१
ततस्तलमुखाभ्यां च	४	७१	तालं तन्त्रीमृदङ्गानां	१७	४३३
ततस्तलमुखाभ्यां च	३	५८	तीवटिग्रहभेदेन लयताल	१९	४७५
ततः कलासतो	१७	४३१	तिर्यङ्मुखा प्रधानेन	७	१६१
ततः कुलीरिका चार्या	४	६२	तिरपभ्रमरी तिर्यक्	१३	३०८
ततश्च चिन्दवः पञ्च सप्त	१९	३९०	तिरपभ्रमरी यत्र	११	२६६
ततश्चन्द्रे लीनकं	३	३५	तिरपादिभ्रमर्यत्र	११	२६०
ततः परं शब्दचालि	२	१७	तिरपाद्या भ्रमर्यत्र	११	२६२
ततः शब्देन तदनुद्ग्रहेण	१४	३५२	तिरुवणी चिन्दुको	१५	३७४
ततः स्यात् ससुलू	१७	४२३	तुलं च प्रसरं	६	१३९
तत्र कार्यं द्विधा	२	१३	तैलङ्गभाषया बद्धा	१६	४१५
तत्रैव चतुरस्रं	४	८२	त्रिचतुःपञ्चषट्	१७	४२६
तत्रैवाभिनयेन्नान्दी श्लोकं	५	९२	त्रिचतुर्वाक्यसंपन्नं	१८	४५१
तथान्येऽपि प्रसिद्धाश्च	१५	३६९	त्रिपताकौ करौ	६	१२४
तद् गीतं जकडीसंज्ञं	२१	५४४	त्रिपताकौ पुरा पात्रं	१९	४५
तद्ग्रयोरन्तरालं	३	४७	त्रिविक्रमाकारधारि	१३	३०९
तदा कदडिनृत्यं	१७	४३८	त्रिविभागान् क्रमात्	९	२०२

त्रिसञ्च सौष्ठवं	७ १५९	नानादेशोदभवा देशी	१८ ४७२
त्रिसञ्चेन पिपील्या	७ १६३	नाभावेकमुरोदेशादपरं पुरतः	१३ ३१७
तृतीयां दिशमासाद्य	४ ५९	नामावली नृत्तमिदं	१९ ४७६
दण्डश्चोमाञ्चले यद्वा	२२ ५५५	नामावली यतिनैरिनेरिः	१८ ४६७
दण्डैर्विना कृतं नृत्यं	२२ ५६२	नीवीवद् गतिसञ्चारः क्रमात्	७ १४४
दर्शयन् पिल्मुरूकैमु-	१७ ४२५	निःशङ्क उक्तन्यासः	१० २४७
दर्शयेयुः क्रमात्	५ १०५	निःशङ्क उक्तमोक्षोऽपि	११ २६५
दक्षिणश्चरणस्तस्मान्निष्क्रम्य	३ ५४	निःशङ्कश्चोक्त मोक्षोऽपि यत्र	११ २५३
दक्षिणेनालपद्मेन वामेन	१३ ३२९	नृत्तमण्डपमध्यात् तु	२ १०
दक्षिणेणाङ्घ्रिणा स्थित्वा	१२ ३०५	नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं	१३ ३२५
दक्षिणः खटकः	४ ७९	नृत्या चाविद्वज्जत्राभ्यां	४ ७६
दिशानयापरेऽप्युह्या घर्घराः	१६ ४१२	नेतृनामाङ्कितोदग्राहस्तन्मानात्	१५ २८३
दूरं भूमौ निपतंतः	१२ २८१	नेरिः करणनेरिश्च	६ १३७
देवं गुरुम ऋषिं	५ ८७	पताकहस्तकाद्यन्यतमं	१३ ३१८
देशी द्राविडदेशस्य	१५ ३७२	पताकोऽधस्तलश्चान्यः	६ १३२
द्वितीयायां तृतीयायां	४ ७३	पताको मणिवन्धस्थो	५ १०६
द्वितीयोऽपि तदा	११ २७९	पताको स्वस्ति लौ	१४ ३३८
द्वित्रिचतुःपञ्चधा तु	१६ ३९७	पद्मबन्धमिति ख्यातं	९ १९८
द्वाद्दशेति समाख्याता	६ १४०	पद्मगगममुद्दीप्तं तन्कथा	१५ ३८९
द्वात्रिंशद्वा चतुःषष्टिः	२१ ५४९	पदान्तरगन्तरागा यद्	१८ ४५९
दृष्ट्या च हास्यया	१४ ३४०	पञ्चमीं दिशमासाद्य	४ ८४
दृष्ट्या विधृतशिरसा	१४ ३४७	पर्यायान्तर्तनं कुर्यात्	२० ५१३
धनुःकर्म स्थितावर्त्तचायी	४ ८०	परावृत्तं न मूर्ध्ना	१४ ३४४
धरूणां ज्ञातयः	१७ ४२२	परिभ्राम्यावर्ती याति	१२ २८८
धरूपूर्वाधके यत्र	१७ ४४४	परिमण्डलिनेनाथ	१३ ३३०
धात्वादिरहितं गीतमालाप	१७ ४२२	पलाशिगृध्रक्रीडाया	१० २३३
धुवाडाख्यं च तञ्जेयं	८ १७८	पश्चात्क्षिप्तावुरःक्षेत्राद् यत्र	१० २३०
नमनोन्नमनं तुङ्गमुर्ध्वाधः	१७ ४३९	पश्चाद्न्याथ तं हस्तं	१३ ३२१
नम्रपृष्ठ लताहस्तौ	२१ ५३३	पश्चिशार्दूलकं सिद्धप्लुतकं	१० २४२
नर्तको नर्तकी	२ ६	पातयेच्चरणौ व्योम्नि	१२ २९५
नर्तनं तनुयान पात्रं	१८ ४५७	पादपार्श्वयुगे स्थित्वा	६ ११६
नर्त्तनाभरणं तिर्यक्ताण्डवं	१० २४०	पादस्य निर्गमं	२ ३०
नर्माङ्गं नर्त्तनं	१७ ४३४	पादान्तानुप्रासयुतं	१८ ४५३
नवभिः करणैरेभिः	७ १५४	पादाग्रतश्चरित्वा तु	६ १२५
नागबन्धं तदा प्रोक्तमन्यत्	९ २०५	पादाभ्यां दर्शयेत्	१३ ३२४
नानागतिलसद्भावं लसल्लास्याङ्ग	१८ ४५८	पारसीकैः पण्डितैस्तद्	२१ ५४१

पार्श्वद्वन्द्वं सुलुनामा	३ ३७	बाह्यान्तस्तिरपच्छत्रयक्राद्या	१२ ३०४
पार्श्वरेचितकं तत्र	४ ६७	भवतां भूतये	५ ९३
पार्श्वयोरुभयोस्तद्वद्घातभेदै	२२५ ५६	भवेद् द्विशिखरत्वं	३ ४१
पार्श्वोर्ध्वजानुनी दण्डपक्षं	७ १५१	भानोर्गतिरिवालक्ष्ये हस्ताभ्यां	५ ११२
पार्श्वयोरुभयोस्तद्वत्क्रियया	६ ११५	भावहावविलासैश्च	१६ ४०५
पार्श्वयोरुभयोस्तद्वद्	२२ ५५६	भावहावसुलास्याङ्गनर्तनं	१७ ४२७
पार्श्वरेचितिका चारी	९ २२३	भुजंगत्रासिनामोक्षे तद् ध्रुवाडः	१० २३६
पिडिवाटः शिरिपिडी	१६ ४१०	भूमावेकं समास्थाय	१२ २९४
पिल्मिरूकैमिरूरम्यकलासैरिति	१६ ३९१	भूमेरूर्ध्वस्थितिः	३ ४४
पुनर्मुहुपमानृत्येच्चेत्	२० ५१७	भ्रामयित्वा पतेद्	११ २७७
पुनः कलासशब्देन	१७ ४३६	मण्डलभ्रमितौ श्लिष्टौ	५ १०७
पुनः पूर्वार्धकं	१७ ४४५	मण्डलं स्थानकं तत्र	४ ६३
पुनः शब्देन तदनु	१४ ३५४	मणिवन्धयुतौ हस्तौ	१९ ४९२
पुरतस्त्रिपदीं गच्छेन्नटवर्यां	३ ३४	मत्तकुक्कुटवद् यत्र	६ १२३
पुरतोऽपिहितौ पादौ	१२ २८६	मध्ये च स्थीयते	६ ११७
पुरः प्रसार्य चरणं	१२ २८४	मंडलस्थानकं कृत्वा	४ ६८
पुष्पाञ्जलिं दर्शयित्वा	५ ९१	मन्दानिलचलद्वीपशिखेवाङ्गस्य	३ ३८
पूर्वं पूर्वं परित्यज्य	८ १८३	मन्मथोद्दीपना दृष्टिः	६ १२१
पूर्ववद्घर्णसंघातं तालधारिणि	१४ ३६०	मुरजादिषु वाद्येषु	२१ ५४६
पूर्वाक्तमोक्षणं यत्र	१३ २५५	मरालगतििका यत्र मध्ये	७ १६६
प्रतितालं क्रमान्यस्य नटो	९ २०४	मरालीं च पुरस्कृत्वा	६ १२०
प्रतिदिक्स्थानकं तुल्यं तत्	९ २२०	महीतले यदासीनो	१२ २९७
प्रतिपादं यत्र बद्धमेवं	१८ ४५४	मानृकामुनिनागांश्च	२ ७
प्रनृत्यन्ति समादाय	२१ ५४८	मायूरीं भानवीं	५ १०३
प्रभुनामाङ्कितं द्वित्रिविरामाढ्यं	१५ ३८०	मुख्या तु कद्दिधरु	१६ ४१७
प्रयोजिते तदा ताला	८ १९१	मुखचालिरिति प्रोक्ता	२ २२
प्रसार्य जङ्घिकां	२० ५२०	मुखचालिश्चोरुपाणि ध्रुवाडा	२ १६
पृष्ठाप्रसारिताभ्यां चेत्	२० ५०९	मुखं तु पूर्वगङ्गः	२ २१
पृष्ठे गुरुः	२ २६	मुहुपस्थो नटो यत्र	२० ५१६
बहिर्बर्हकलाकारो करौ	५ ११०	मेलापकान्तराभोगसमस्त	१६ ३९६
बहुभिर्बाहुभेदैश्च सालपलव	२० ५०६	मेलापकं वादयेयुः	२ ४
ब्रह्माख्यस्थानकेनापि धीमान्	१३ ३३४	यतिताललयस्थानचारीहस्तात्मकं	६ १३५
बाह्यभ्रमरिका पश्चाद्	११ २५२	यतिलग्नः समुत्पाद्यः	१० २३२
बाह्यभ्रमरिका यत्र	११ २५६	यतः पादस्ततो	२ २९
बाह्यभ्रमरिकां वद्ध्वा	७ १४७	यत्र किङ्किणिकावाद्यैराहति	१६ ४०९
बाह्यभ्रमरिकांरायंरंगालुहोर्मयी	११ २५८	यत्र चेष्टाविरहितं	२१ ५४२
बाह्यभ्रमरिनिःशङ्कौ	११ २५४		

यत्र तत् प्रसरं प्रोक्तं	९ २२४	लोकवृत्त्यानुसारेण ज्ञातव्यास्ते	१२ ३०२
यत्र तालयुजा	१४ ३५१	वपुः पुनः पुनर्यत्र	१९ ५००
यत्र पाटक्षरालापस्ततो	१५ ३८८	वादीशगजभैरूडे होर्मयी	११ २६१
यत्र स्वस्तिंकरमावर्त्य	१२ २८२	वादीशगजभैरूडे	१० २४१
यत्राङ्ग मोटयेत् तिर्यग्	१९ ४९६	वाद्यानां नादसार्यं	२ ३
यत्रानेकस्थितिः क्रीडा	७ १५७	वानरक्रीडिताकारं तलसञ्चेन	९ २१५
यत्रोद्ग्राहध्रुवपदो बद्धो	१५ ३७७	वामावर्तं भ्रमेद्	१२ ३०६
यत्रोद्ग्राहं च मेलापं सकृद्	१५ ३७९	वामावर्तं भ्रमेदाहुस्तां	१३ ३१०
यथाक्रमेण सप्तभ्यामष्टभ्यां	४ ७५	वामो यथास्थितः	४ ६९
यथाभिनयसंपन्नं विचित्र	१८ ४७४	विचित्रगतिसंपन्नं	१९ ४८२
यदा तु मङ्गरो	५ १०८	विचित्रचरणं साक्षाद्राग	१७ ४२४
यदा प्रागुक्तमोक्षः स्यात्	१० २४९	विचित्रचतुरो हस्तो	८ १७३
यदा मुहुपचारीभिर्नृत्ये	२० ५१३	विचित्रभ्रमरो बालक्रीडासाधन	८ १६८
यदि प्रयोगो मेलापे	१६ ३९८	विधाय नर्तनं	१७ ४३७
यदोत्प्लुत्योक्तमोक्षश्चेत्	१० २४५	विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रय	२१ ५३७
यदोल्लासलसद्गात्र	१४ ३५६	विदध्यान्नर्तनं सम्यक्	१९ ४९२
यस्य गीतस्य यो	१३ ३२७	विद्युद्भ्रान्तं ततश्चन्द्रवर्तनामनि	७ १५२
यावनीभापया युक्तं	२१ ५३७	विद्युद्विलासितं वात्यावर्तितं	१० २३९
युक्तायुक्तैर्नृत्तदस्तैः	१९ ४८६	विरामसाम्यगतिभिलगिर्नाना	१९ ४७६
युगपत् स्फुरणात्	५ १२२	विलम्बितोच्चारमानं	१७ ४२८
येन येनेह गोतेन	१४ ३६१	विलम्बितैकताली च	९ २२२
रञ्जातालः सुयतिवान्	८ १७२	वैष्णवं च हयक्रान्तं	६ १३०
रङ्गं प्रविश्य	१७ ४२०	वैशाखमण्डलालीढप्रत्यालीढ	१६ ४०३
रङ्गपीठस्य मध्ये	२ २७	वैशाखरेचितं तत्र बाहू	४ ६१
रङ्गमध्यमनुप्राप्य चार्या	५ ८८	व्यावर्तनाद् बहिश्चान्तस्तदा	५ १०९
रञ्जकाय वदेत्	२ ३२	व्यावर्तयेत् तमेवाङ्घ्रि	१३ ३२२
रथचक्रैकपादेन परेण	७ १४२	व्यावर्तितो लताहस्तो	३ ४०
रसभावाङ्गदृष्ट्याद्यैर्भावनेरिः	१९ ४८८	द्योगिनि निःशङ्कदिङ्गुभ्यां	१२ २८९
रागालापानुगां	३ ४८	शनैरुच्चारितो पादो	५ १११
रायरङ्गालुक्कान्त्यस्तत्	११ २५७	शब्देन तेनकैशब्दखण्डेन	१४ ३५३
रायरङ्गालुक्कान्त्यो	११ २६३	शिरोद्वारपादानां युगपद्	३ ५२
रेखा सौष्टवलास्याङ्गैः	१६ ४०४	शास्त्रसङ्गथावृत्तिश्चेत्	१६ ३९२
रेखा सौष्टवसंपन्नः स	७ १४५	शिरितिः खलुखलुश्चेति	१६ ४११
लङ्घयेदङ्घ्रिणान्धेन प्रोक्ता	१२ २८३	शुकतुण्डेन हस्तेन	१४ ३३५
लयतालविचित्राङ्गैर्यतिनृतं	१९ ४७९	शुद्धचालि च तव	४ ८५
ललाटतिलकं पश्चात्	७ १५३	शैवाण्यस्थानकेनापि	१४ ३३९

शोभितं यत्र दिग्भावैश्चित्रं	७ १६४	सू लुपूर्वं यदोत्प्लुत्य	१२ २८०
शृङ्गारसभावाढयं रागताल	१८ ४५२	सू लुं बद्ध्वा	११ २७६
श्रीरङ्गाद्या विप्रकीर्णास्तथा	१५ ३६८	सू लु बद्ध्वाकपादेन	११ २७८
षड्गादन्यतमः सोऽत्राभिनेयो	१३ ३२८	सू लुचालनकं तत्र	३ ५५
षड्भिरङ्गैश्वतुभिर्वा	८ १८१	सू लुपूर्वं तदा	११ २८५
षष्ठो दिशं	४ ८१	संक्राणिकगतिभिः प्रवृत्तं	८ १७७
स एव द्रुतमानेन	१९ ४८८	संक्राणिकगतिभिः प्रवृत्तं	२० ५०३
सङ्कीर्णनेरिर्भावादिनेरिश्च	१८ ४६७	संप्रदायानुसरणं चिन्दुनृत्यं	१६ ४०८
सप्तसप्तकराक्रान्तस्थानं	२ ११	संहतापुरमुत्प्लुत्य	१२ २९६
सप्तमीं दिशमासाद्य	४ ७२	स्तम्भक्रोडनिका चारी मध्ये	१० २३१
समतालप्रयोगेण यतिभेदेन	७ १६७	स्थितिरथेप्सिता तद्विग्रहकं	८ १६९
सवालमकरा लास्यध्वारी	७ १५८	स्थितिदिग्भेदनो विशुद्गतित्वत्	१० २२८
सभासंमुखता हस्तो	४ ६६	स्थानकेन विनिर्दिष्टो	१४ ३४५
समत्रिभागलान्तानां प्रत्येकं	९ २०१	स्थापयेत् पूर्वपूर्वार्धं	९ २०८
समद्विभागलान्तानां प्रत्येकं	८ १८८	स्थाप्यादिवर्णानङ्केन भावान्	१५ ३६३
समपादेन च स्थित्वा	६ १२६	स्यन्दपस्यन्दिताध्यर्धस्थिता	१६ ४०२
समपादे स्थितं	२१ ५२९	स्यादक्षिभ्रूविकारादि	१८ ४६३
समस्तैरथवा व्यस्तैस्तत्	१४ ३५०	स्वरमन्द्रादयो गीतप्रवन्धा	२ १८
समानमात्रलान्तैश्च	८ १८२	स्वरमञ्चकनृत्यं	१४ ३५७
समां कृत्वा समनखं	४ ६०	स्वस्थाने च तृतीये च	९ २०३
समुच्चरति षड्गादिमगणादि	१३ ३१५	स्वसःश्रममतो नृत्वा	२ २४
समां पादौ यदान्यस्मिन्	१२ २९२	स्वर्णादिधातुबद्धान्तौ सरलौ	२१ ५५२
सर्वे घर्षरभेदास्ते	१६ ४१३	हस्तबाह्वङ्घ्रिभिः	८ १८०
सविलासं मन्दमन्दं	३ ३६	हस्तेन कर्गहस्तेन	१४ ३४६
सव्यापसव्यतः पश्चाद्	५ ९०	हस्तयोः पादयोस्त	९ २०९
सव्यापसव्ययोरुर्ध्वक्रियया	५ ११३	हस्तैरभिनयेदर्थान्	१५ ३६४
सव्यापसव्ययोस्तत्र वसुताला	९ १९७	हंसपक्षकरो यत्र	९ २१३
सव्यापसव्ययोर्यत्र	१९ ४९३	हंसास्याभिधहस्तेन	१३ ३३२
सव्यापसव्ययोर्हस्तपादयोः	९ २१०	हंसां च कुक्कुटीं	५ १०४
सशब्दघातभेदैश्च पुरतः	२२ ५५७	हावभावादिसुलयतालादिगति	१४ ३५५
सशब्दा च क्रिया	२१ ५४१	होर्मयीकर्त्तरीपूर्वं कार्त्तरी	१२ २९९
सक्षिप्रगजलीलाश्च वर्तना	९ २१९	होर्मयी चोक्तमुक्तिः	११ २६७
सा एवायुतसंयुक्तहस्तैः	१९ ४८४	हृदान्तःस्थितपाठीनो	६ ११४
सा पट्टिः कथिता	१७ ४३०		
सा धरू कथिता धीरैः	१६ ४१६		
सार्थाङ्गं नृत्यवन्तृत्येन्निरर्थाङ्गं	१५ ३७०		

पारिभाषिकाणां शब्दानामनुक्रमणी ।

	पङ्क्त्यङ्क	पृष्ठाङ्क		पङ्क्त्यङ्क	पृष्ठाङ्क
अग्रतलसञ्चर	५०	३	इङ्गन	३१	२
अङ्गन	३१	२	उक्तमुक्तिः	२५१	१०
अङ्गीकृत	९७	५	उत्कटस्थ	४९९	१९
अञ्जलिकर	८६	४	उत्सव	५४७	२१
अडालु	२५७, २५९, २६४, २७२, २७७	११	उद्ग्राह	४४०, ४५५, १७, १८ ५४३	१७, १८ २१
अदृष्टपृष्टतुल	१३८, १७४, १७५	६, ८	उद्वेष्टित	६५, ९६	४, ५
अर्हिक	४१९	१७	उरुप	१३६, १४६	६, ७
अधस्तल	१३२	६	उरुपाणि	१६, २३४	२, १०
अधोमुख	९६ ३३६	५, १४	उरुवेणी	२२६	१०
अनिबन्ध	५३६	२१	उरोवर्त्तित	२२७	१०
अनिबन्ध	१३	२	उर्ध्वसञ्च	४५, ५९	३, ४
अनिबन्धनृत्त	५६३	२२	ऋपि	८७	५
अपस्यन्द्भित	४०२	१६	कटिस्थ	३३३	१३
अभिनेय	३२८	१३	कटीच्छिन्न	३३९	१४
अर्धचन्द्र	३३३, ५२९	१३, २१	कमल	४७०	१८
अर्धरेचित	८३	४	कमलवर्त्तनि	१०२, १०७	५
अलग्ढ	२७४	११	कर	७०	४
अलपद्म	३२९	१७	करण	७८, १५४, ५२५, ५२६	४, ७, २०
अलपलव	९५, ९९, १५०, ३४१, ५०८	५, ७, १४, २०	करणनेरि	१३७, १४८, १५६	६, ७
अश्वक्रान्ता	३३६	१४	करणपूर्वक(नेरि)	१५५	७
अहिफणाकार	४०	३	कराङ्घ्रि	२०२	९
आलाप	४२०	१७	करिहस्त(क)	६४, १७१, ३४६	४, ८, १४
आलीढ	१५५, ४०३	७, १६	करुणा(द्विष्टि)	३३५	१३
आवर्त्तचारी	८०	४	कर्णाट भाषा)	४२९	१७
आविद्ध	३३, ७६ २२२, २२९	३, ४ ९	कर्तरी	१३९, २२८, २२९	६, १०
आहति	४०९	१६	कट्टि	४३८	१७

कटाडधरू	४१७, ४१८.	१६,	ग्रहस्वर	३२७	१३
	४४३	१७	गान्धार	३३७	१४
कलविक	२३८, २४५	१०	गीत	१८, ३२७, ३५९, २, १३,	
कलास	३९१	१६		३६१, ४२२, ५३७, १४.१७,	
कलासत	४३१	१७		५४४, ५६०	२१, २२
कलासशब्द	४३६	१७	गीतनृत्त	३६६, ३७१	१५
कलादि	५३८	२१	गीतपद्धति	११८	६
काङ्गूल	३४३	१४	गीतमुद्रा चिन्दु)	३७५, ३९५,	१५,
कातरा	८७	५		४०१	१६
किङ्किणिकावाद्य	४०९	१६	गीर्वाण (भाषा)	४५०	१८
कुक्कुटासन	२९१, २९७	१२	गुण्डाल	४७०, ५०६,	१८,
कुक्कुटी	१०४	५		५०७	२०
कुडुक	६	२	गुरु	८७	५
कुडुप	४७१	१८	गोपुच्छ	१५७	७
कुरङ्गी	११८	६	घर्घर	३०९, ४११, ४१२,	१६,
कुलीरिका	६२, २१३	४, ९		४१३, ४३५	१७
कैमिरू	३९१	१६	घर्घरी	५२३	२०
कैमुरू	४२५, ४३२	१७	चक्र	३०४, ३११	१२
कैवर्तन	४६९, ४९४, ४९५	१८, १९	चक्रबन्ध	१८६, १९२	८, ९
कोलचारिक ?)	३७४, ३९३	१५, १६	चक्रभ्रमरि (का)	२४४, २४६,	१०
कोलचारीचिन्दु	३९४	१६		२४८, २५०, ३११	१३
कौक्कुटी	८५, १२३	४, ६	चटु	५३४, ५३५	२१
क्रम	२२०, ४१८	९, ६	चटुक	४७१	१८
क्रीडा	१५७	७	चतुर	३२९	१३
खञ्जनी गति)	१०४, १२५	५, ६	चतुरस्र	५६, ५७, ८२, १४१.	३, ४
खटका	७९	४		१४७, ३१६	७, १३
गज	२४१, २६१	१०, ११	चन्द्र	२३, ३५	२, ३
गजगामिनी	१०४	५	चन्द्रवर्त	१५२	७
गजर	४	२	चरण	३२०	१३
गजलीला	१२७	६	चामर	५५४	२१
गणेश	८	२	चारी	३३, ५०, ५८, ७१,	३, ४, ५,
गति	४९, १२८, १४३, ३, ६, ७,			७६, ८३, ८७, ८८,	६, ९,
	१७१, २२६, २३२	८, १०,		१३५, २२३, २३१,	१४, २२
	२३५, ४७८, ४८२, १४१९,			३३७, ५५९	
	४९३, ५०३, ५१६,	२०,	चारुपाट	४०६	१६
	५३४	२१	चालन	३६, ३९, ६०, ८१	३, ४

बालि	१७	२	ताल	३२, ४७, १३५, १४१, २, ३, ६,
चित्र	१३७, १६४, १६५, ६, ७, १२,		१६३, १७६, १७८, १८१, ९, १३,	
	२९३, ४३२, ५५९	१७, २२	१८४, १८७, १९१, १९४, १४, १७,	
चित्रकलास(क)	१३३	६	२००, २११ ३२४ ३५५ १८, १९,	
चित्रित	५५३	२१	३६०, ४२१, ४३३, ४३५, २०, २२	
चिन्दु(क)	१८, ३७२, ३७४	२, १५,	४४६, ४४८, ४५२, ४७५,	
	३७५, ३९०, ३९३,	१६	४७९, ४८१, ५०६ ५६०	
	३९५, ३९७, ४०८,			
	४१४		तालग्रह ३६५ १५	
छत्रभ्रमरि (का)	१४८ ३०४, ७, १२,		तालधारिणी ३१४ १३	
	३१०	१३	तालयुजा ३५१ १४	
छुरिका	५५५	२१	तालरूपक ५०३, ५०४ २०	
जकडी	५४२, ५४४,	२१	तिरप ३०४ १२	
	५५५		तिरपभ्रमरी २६०, २६२, २६४, ११, १३	
			२६६, ३०८	
जलकीट	२२०	९	तिरुवणि ३७४ ३८४ १५	
जानुकुञ्चितक	६७	४	तिरुवणिचिन्दु ३८५ १५	
जारमान	२१५	९	तिर्यकरण ५२८ २०	
झपाताल	१५०	७	तिर्यङ्मुखा ८३, १६१ ४, ७	
डांडु(क)	२४४, २६६,	१०,	त्रिपताक ९८, १२४, १६२ ५, ६, ७	
	२४८, २५०, २५२,	११,	त्रिविक्रम ३०९ १३	
	२५५, २६०, २६२,	१२	त्रिसञ्च १५९, १६३ ७	
	२६४, २६६, २७३,		तीवटि ४७५ १९	
	२८५, २८६		तुल्ल १३९ ६	
डिंडु	२९९	१२	तुल्ल २१८, २२१ ९	
ढेंकि	२९३	१२	तैलङ्ग(देश)	
तण्डु	८	२	तैलङ्ग(भाषा)	
तन्त्री	४३३	१७	तोलरूप १३८, ६	
तलपुष्पपुट	८९	५	दण्ड(क)	
तलमध्य	४५	३	५५०, ५५४, २१, २२	
तलमुख	७१	४	५५५, ५६२	
तलधिलासित	१५१	७	दण्डपक्ष १५१ ७	
तलसञ्च	२१५	९	दण्डरास ५६१ २२	
ताण्डव	२४०	१०	दलरूपि २०० ९	
तान	३५९	१४	द्राविड(देश)	
तार्क्ष्य	२३८	१०	द्राविड(भाषा)	
तार्क्ष्यपक्ष	२४७	१०	दिवस्थान ३७६ १५	
			दिडिक ३४९ १४	
			२७५, २८८, २८९ ११, १२	

द्विशिखर	४२	३	निषाद्	३४७	१४
दृष्टकपृष्ठक	१४६	७	निःशङ्क	२४७, २४८, २५०,	१०,
देष	८७	५		२५३, २५४, २६५,	११,
द्रुत	१८२, ४३१, ४४८,	८, १७,		२७२, २८१, २८९	१२
	४९०, ४९९	५०२, १८, १९,	नेरि	१३७, १४५, १४९,	६, ७,
		५०५		१५५, ४६७, ४६८,	१८,
धनुःकर्ष	८०	४		४८२, ४८३, ४८६	१९
धरु	१९, ४१६,	२, १६,	नृत्त	१३, ४७६, ५४२	२, १९,
	४२६, ४४४	१७			२१
धरुकदृष्टि	४४२, ४३	१७	नृत्तहस्त	४८६	१९
धरुनृत्य	४४९	१८	नृत्ततत्त्वज्ञ	७४	४
धीर	३४०	१४	नृत्तज्ञ	२२	२
धुत	३४१	१४	नृत्य	३२६, ३५१, ३६२,	१३, १४,
धुवाढ(डा)	१६, १७९, २३६,	२, १०,		४३८, ४४५	१७
	२३७, २६८	११, ८	न्यास	४३७	१७
ध्रुव(क)	३५३, ३९८, ४००	१६, १४	पटव	४१०	१६
ध्रुवपद	१९, ४६५, ४७६,	२, १५,	पट्टि	४२६, ४३०	१७
	४५५, ४५६, ४६२	१८	पण्डित	५४३	२१
ध्रुवशाम्य	५४१	२१	पताक	९५, १०६, १३२,	५, ६,
धैवत	३४५	१४		३१८, ३३८	१३, १४
ध्वनिपेशल	४३५	१७	पताकहस्त	१४३	७
नटी	४२७	१७	पद्मकोश	२१९	९
नडनेरि	४६८, ४९०, ४९१	१८, १९	पद्मबन्ध	१९८, ९९,	९
नतजानु	५११, ५१२	२०		२०५, २०७	
नम्रक	१३७, १६८,	६,	पर	१४२	७
	१६९, १७०	८	परानृत्य	३४४	१४
नर्तन	४२०, ४२७, ४३२,	१७,	परिमण्डलित	३३०	१३
	४३४, ५३९	२१	पलाशिघृघ्न	२३३	१०
नर्तनाभरण	२४०, २५५	१०, ११	पल्लव	३४१	१४
नम्रपृष्ठ	५३३	२१	पक्षिशार्ङ्गल	२४२, २६५	१०, ११
नाग	७	२	पक्षिसालु	२७३, २८९	११, १२
नागबन्ध	२०५, २०६	९	पाट(तः)	८५, ४२१	४, १७
नान्दी	९२	५	पारसीक	५४३	२१
नामावली	४६७, ४७६, ४७७	१८, १९	पार्श्विरेचित	२२३	९
निबन्धकं	१३	२	पार्श्वरेचित	६७	४
निबन्धनृत्य	४६५	१८	पिडिवाट	४१०	१६

पिल्मिरु-रू	३९१, ४४४; ४२५	१६, १७	भ्रमरिका	२३७, २४८, २५२, १०, ११,
पिहित		२८६ १२		२५८, ३०४, ३०६, १२,
पुरण्डरी		४७० १८		३०७ १३
प्रतिताल		२०४ ९	मकर	१०८ ५
प्रतिपाद्		४५४ १८	मकरवर्तन	१०१, १०९ ५
प्रत्यालीढ	८१, १३०, ४०३,	४, ६, ३४४ १६	मणिबन्ध	१०६, ४९२ ५, १९
प्रबन्ध		४ २	मण्डी	४४०, ५१३, ५१४ १८, २०
प्रसर	१३९, २२४, २२५	६, ९	मण्डप	१० २
पृष्ठतुल		१३८ ६	मण्डल	६३, ७७, ४०३ ४, १६
वद्ध		३७६ १५	मण्डलभ्रमित	१०७ ५
बन्धक	१३, १४, २०	२	मण्डलस्थान	६८ ४
बाल		१५८ ७	मण्डलाकृति	११२, ५३२ ५, २१
बाह्यभ्रमरि		२५४ ११	मण्डली	५६० २२
बिडुलागव	१६, २७१, ३०१,	२, ११, ३०३ १२	मत्तकुक्कुट	१२२ ६
बिन्दुचिन्दु	३७३, ३८१, ३८२	१५	मध्यदेशी	४५० १८
बीभत्स		३४३ १४	मध्यमस्वर	३४० १४
बीसं		२९५ १२	मयूरललित	३३० १३
ब्रह्मा		३३४ १३	मराल	७६ ४
भरत		८ २	मरालगति	१६६ ७
भानवीगति		११३ ५	मराली	१२० ६
भाव	३१७, ३२३, ३५५,	१३, १४, ३६३, ४०५, ४२७,	मसृण	५५३ २१
		१५, १६, ४५६, ४६४, ४६८,	मातृका	७ २
		४८८ १९	मान	४३१ १७
भावनेरि	४८८, ४८९	१९	मायूरी	१११ ५
भावाढ्य		४५२ १८	माला	३७४ १५
भिन्न	१५७, १५९	७	मालाचिन्दु	३८६, ३६७ १५
भुजङ्ग		२३६ १०	मित्र	१३७, १५९, १६० ६, ७
भैरूड		२६१ १०, ११	मुक्तधरू	४१७ १६
भ्रमण		५३३ २१	मुक्तिकाधरू	४४८, ४९१ १८
भ्रमरी	२३५, २५०, २५६,	१०, ११, २६०, २६२, ३०६;	मुक्ति	२६७, ३९९ ११, १६
		१२, १३, ३१२, ३१३, ५१८,	मुखचालि	१६, २२, १३४ २, ६
		२०, २१, ५२५, ५४०, ५५९	मुंगर	२९७ १२
		२२	मुंगरणं	२७४ ११
			मुड्ड	५१८ २०
			मुड्डप	४७०, ५१५, ५१६, १८, २०
				५१७, ५१९ २०

मुद्रा	३७५, ३९५, ४०१	१५, १६	रविचक्र	१९८, १९२, १९३, १९४	८, ९
मुक्ति	७	२	रविसञ्चर	२५३	११
मुरज	५४६	२१	रस	४८८	१९
मुरण्डरी	४१९, ४२०	२०	राग	४८, ९२	३, ५
मुरू	४९७, ४९८	१९	रागमूर्ति	४२४	१७
मुरूक	५००	१९	राय	२७३, २८९	११, १२
मुरूरट्ट	४६९	१८	रायरङ्गालु	२६७, २५८, २६३,	११
मुष्टि	७९	४		२६६, २७२	
मेलन	४३३	१७	रास	१४१	७
मैलाप	३७७, ३७९,	१५,	रिषभ	३३४	१३
	३९६, ३९८	१६	रेखा	४०४, ४६१	१६, १८
मैलापक	४	२	रेचन	५२	३
मैनवीगति	११५	६	रोलंबांग	२४१, २६३	१०, ११
मोक्ष	२४९, २५३, २५९,	१०, ११,	लगदिडुक	३००	१२
	२६५, ४००	१६	लगपाटक	४१०	१६
मोक्षक	२६१	११	लताकर	६९, २३	४, १०
मोक्षण	१३०, २५५	६, ११	लतावृश्चिक	१५३	७
मृदङ्ग	४३३	१७	लताहस्त	४०, ६८, ५३३	३, ४, २१
यति	१३५, १६७, १७२,	६, ७,	लय	३२, १३५, १४१,	२, ६, ७,
	२३२, ३५१, ३५४,	८, १०,		३२४, ३५५, ४२१,	१३, १४,
	४२८, ४६७, ४७९,	१४, १७,		४४६, ४४८, ४७५,	१७, १८,
	४८०	१८, १९		४७९, ४८१, ५३९,	१९, २१,
यमक	४५३	१८		५६०	२२
यवन	५४४	२१	ललाटतिलक	१५३	७
बक्ष	७, २३८	२, १०	लक्ष्मी	८	२
बाषनीभाषा	५३७	२१	लावणी	५३०, ५३१, ४७१	१८, २१
रङ्ग	११, १२,	२,	लास्य	१५८, ४२३, ४२७	७, १७
	२१, ४२०	१७	लास्याङ्ग	४०४, ४५९	१६, १८
रङ्गपीठ	९, २६, २७	२, ५	वक्त्र	७६	४
रङ्गभूषण	२४०, २५९	१०, ११	वक्त्रहस्त	३३	३
रङ्गमध्य	२८, ६५, ७५, ८८	२, ४, ५,	वर्णक	५५३	२१
रङ्गालु	२७९	११	वर्तना	२१९	९
रट्ट	५००	१९	वसन्त	५४७	२१
रट्टमूरु	५०१	१९	वसुताला	१९७	९
रथचक्र	१४२	७	वाणी	८	२
रवि	२३९	१०	वाहक	५४६	२१

वादी	२६१	११	सञ्च	५९, १५९, १६३	४, ७
वादीश	२४१	१०	सम	१५७, २८०, ३२१, ७, १२,	
वाद्य	५४६	२१		३३३, ३५९, ३६५	१३, १४,
वानरक्रीडिता	२१५	९			१५
विचित्रगति	४८२	१९	समताल	१३७	७
विद्युत्	२२८, २३९	१०	समपाद्य	३३	३
विधूत	३३८, ३४७	१४	सन्धी	५४९	२१
विप्रकीर्ण	८२	४	सव्यसूची	५०	३
विराम	४७८	१९	सव्यहस्तिकर	६४	४
विलम्बित	४२८, ४८१	१७, १९	सक्षिप्रगजलीला	२१९	९
विलास	४०५	१६	संप्रदाय	१०५, ४०८	५, १६
विष्णु	९	२	साचिमण्डल	१२१	६
विक्षिप्त	४९६	१९	सालगसूडक	३६८	१५
वैशाख	६१, ४०३	४, १६	सालङ्गनेरि	४८४, ४८५	१९
वैष्णव	१३०	६	सालङ्गपूर्वक	४६७	१८
वृक्षबन्ध	२११	९	सालपल्लववर्तन	५०८	२०
वृक्षबन्धताल	२१२	९	सांप्रदायिक	२	१
शब्द	३५२, ३६३, ५४१	१४, २१	सिंहप्लुत	२४२, २६७	१०, ११
शब्दचालि	१७	२	सीलुक	१३८, २१५, २१७	६, ९
शब्दनृत्य	३२५, ३२६	१३	सुलु	३७, ३९, ५७, ६८, २, ३, ४,	
शास्त्र	३९२	१६		७८, ८२, ८४, २२७, १०, ११,	
शिखर	३१६	१३		२३५, २६९, २७६, १२, १६,	
शिखरहस्त	१३१	६		२७८, २८०, ४०५,	१७
शिरितिर	४११	१६		४२३, ४३५	
शिरिपिडी	४१०	१६	सुलुप	४३४	१७
शुकतुण्ड	३३५	१४	सुलुपूर्व	२८५	१२
शुद्धचालि	८५	४	सुलुवर्तन	४३, ६३	३, ४
शुद्धचिन्दु(क)	३७३, ३७७, ३७८	१५	सुलुचाल	५५	३
शैवाख्य	३३९	१४	सूची	३२०	१३
श्रीरङ्ग	३६८	१५	सूच्यद्वै	३११	१३
श्रुष्ट	१०७	५	सूच्यास्य	९७	५
शृङ्गार	४५२, ४६३	१८	सूडा	३६७	१५
सङ्कीर्ण	४६८, ४८६, ५०३	१८, १९, २०	सूर्यमण्डल	५३४	२१
			सौष्टव	४०४	१६
			स्तम्भक्रीडनिका	२३१	१०
सङ्कीर्णनेरि	४८७	१९	स्थान	६२, ६३, ७७, १३५	४, ६

स्यन्दि	४०२	१६	हाव	३५५, ४०५, ४२७, १४, १६,
स्यन्दिता	४०२	१६		४५६ ४६४ १७, १८
स्वर	३२३, ३३७, ३४२, १३, १४,		हास्य	३४० १४
	३४८, ४३१	१७	हिगर	२९८ १२
स्वरभाषा	५४३	२१	होर्मयी	२४६, २४८, २५०, १०,
स्वरमञ्चक	३५७	१४		२५२, २५४, २५६, ११,
स्वरमञ्चनृत्य	३५८	१४		२५८, २६१, २६२, १२
स्वराभिनय	३४९	१४		२६७, २७२, २८३.
स्वस्तिक	५४, ५८, ७१, ३, ४,			२९९
	१०६, २८२, ३०८, ५, १२,		होलुनाम	१३९ ६
	३३८ १३, १४		होल्लु	२३३, २३४ १०
हयक्रान्त	१३०	६	हंसलील	२१३ ९
हस्त	१३५, १५०, १७३, ६, ७,		हंसपक्ष	२१३ ९
	२२२ ८, ९		हंसास्य	९८, ३३२ ५. १३
हारिणीगति	११९	६	हंसिनीगति	१२१ ६

GLOSSARY

[N. B. As said in the introduction, only one Ms. was available for the edition of this text, and so many obscurities have remained in it. Some of the terms which are probably Non-Indo-Aryan were discussed by me with my friend, Shri Ramanujacharya, who is a good scholar of the Southern dancing traditions. He was kind enough to explain some of these terms for which I express my thanks to him].

शब्दचालि - Cāri movement with Śabdās (sounds).

बिहुलागव - One type of utplavana (jumping).

चिन्दु - a type of dance in South India.

धरू - Śabdām.

पट्टि - a kind of dance.

सुलू - a particular position in Dance.

सारी - Lāsya type of Kathakali.

नेरी - a fundamental dance of Tāndava type.

भिन्न - a fundamental dance of Lāsya type.

चित्र - a dance pose with Bhāva gīta.

नत्रक - Gatibhedam-a kind of dance.

तुलू - Talasañcara Sthānakam.

सीलुक - Vānarakriḍitam-an aṅgahāra pose.

होल् - Gṛdhralinaka-an aṅgahāra pose.

धुवाडा - pose in Bhramaṇas.

सक्रबन्ध - Bandhana used in the abhinaya of Śṛṅgāra.

पिल्मिरू - flute (musical instrument).

दिडिक - an instrument.

दिडु - a sound from Diṇḍika.

चिन्दु - Dravidan dance ascribed to gods or goddesses in Daśarā.

शुद्धचिन्दु - a dance without melapāni.

चिन्दु चिन्दु - Dance with melapāni.

तिरुवणीचिन्दु - Dravidian śabdās ascribed to some king.

कलास - the last tāla in the series of Tālas.

Some parallel verses occurring in Bharatārṇavam*-an unpublished work attributed to Nāndikes'vara.

अ. ३. नृत्याध्याय--

सशब्दा च क्रिया यत्र भ्रुवशं यदि भेदतः ।

यत्र चेष्टा विरहितं तन्मृत्यं जकडी मतम् ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page: 21, V. 3)

तालग्रहानङ्घ्रिपदैः समादिश्च यथोचितम् ।

अनेनैव प्रकारेण गीतनृत्यं समाचरेत् ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 15 V. 4)

पादाभ्यां दर्शयेत् तालं लयाच्छब्दाक्षराण्यलम् ।

नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं नृत्तवद्भिर्द्वीरितम् ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 13 V. 6)

समपादे स्थितं पात्रं कटिन्यस्तार्धचन्द्रकम् ।

कटेरुपरि तत्कायं भ्रामयेल्लावणी तदा ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 21. V. 1)

मुरजादिषु वाद्येषु वाद्यमानेषु वादकैः ।

कुतूहलाय भूपानां वसन्ताद्युस्सवेषु चेत् ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 21. V. 1)

Comparable verses from the Bharatakośa*

अडालहुरुमयी - स्थललागनृत्तम्--

अडालाद्या हुरुमयी वामपादेन भूतले ।

यदा तिष्ठेन्निगदिता गणने तण्डुना तदा ॥

वेदः

(See Bharatakośa P. 9. and

Nṛttasamgraha अडालुहूर्मयी P. 11)

करणेरिः - देशीनृत्तम्--

सिंहाकर्षं चावहित्यं निवेशं चैलकादिके ।

क्रीडितं च तुरीयं स्याज्जनितं पञ्चमं तथा ।

षष्ठं चोपसृतं प्रोक्तं तलसंघटितं ततः ।

उद्वृतं चाष्टमं प्रोक्तं विष्णुकान्तं च लोलितम् ।

मदस्खलितसंभ्रान्ते विस्त्रम्भोदघटिते ततः ।

प्रान्ते तलविलासं च प्रोक्तं पञ्चदशाभिधम् ।

रासतालेन मानेन मध्यमेन मनोरमः ।

वेदः ।

*.I am indebted to Śri Rāmānujāchārya for finding out these verses from the manuscript in his possession.

* Ramakrishna Kavi, M.A. T. T. D. Press, Tirupati, 1951.

पतदन्यथोक्तं देवेन्द्रेण, यथा—

करणैः पञ्चदशभिर्युक्तः करणनेरिकः ।
 सिंहाकर्षितमादौ स्यात्ततस्तलविलासितम् ।
 वृश्चिकं च ततः प्रोक्तमन्यद्वृश्चिककुट्टितम् ।
 लतावृश्चिकसंज्ञं स्यादण्डरेचितकं ततः ।
 दण्डपक्षं चोर्ध्वजानु तलसंस्फोटिताभिधम् ।
 विद्युद्भ्रान्तं दण्डपादं ललाटतिलकाभिधम् ।
 पतानि द्वादशोक्तानि पूर्वेषां मततो यथा ।
 जानुवेष्टनसंज्ञं च कराङ्घ्रिस्वस्तिकं तथा ।
 अन्तश्छायाभिधं प्राहुस्त्रीणि पद्धतिकोविदाः । देवेन्द्रः ।

(See Bharatakośa P. 112 and
 Nṛttasamgraha P. 7 Lines 150-155)

कलासः - देशीनृत्ताङ्गम्--

विविधैः पाटशब्दैश्चालङ्कृतं यतिमिश्रितम् ।
 मध्ये पिल्लुमुख्युक्तं ग्रहश्चापि मनोहरम् ।
 कलासरूपकं प्रोक्तं सङ्गीतज्ञैः पुरातनैः । वेदः ।

(See Bharatakośa P. 112 and
 Nṛttasamgraha P. 16 Line 391)

कातरा - देशीचारी—

नन्द्यावर्तस्थितौ पादौ पश्चाच्चेदपसर्पतः ।
 सा चारी कातरा प्रोक्ता देशीनृत्तविचक्षणैः । वेमः ।

(See Bharatakośa P. 126
 Nṛttasamgraha P. 5 Line 87)

कुलीरिका - देशीचारी—

नन्द्यावर्ताभिधे स्थाने स्थितौ तिर्यक् प्रसर्पितौ ।
 चरणौ यत्र तां चारौ कथयन्ति कुलीरिकाम् । वेमः ।

(See Bharatakośa P. 144 and
 Nṛttasamgraha P. 4 Line 62)

सक्रबन्ध - काडनृत्तम्—

पिण्डः स्याच्चतुर्दशभिर्बिन्दुभिरथ ऊर्ध्वतः ।
 दक्षहस्ते ब्रह्मतालो ईडावान् वामहस्तके ॥
 दक्षार्धौ सिंहलीलश्च वामार्धौ यतिशेखरः ।
 सकृद्रूपं ब्रह्मताले स्यादीडावान् द्विवारतः ॥
 सिंहलीलो द्विवारं स्यादेकधा यतिशेखरः ।
 अधश्चोर्ध्वं पिण्डबिन्द्वौ स्यात्समाङ्गेन योजनम् ॥

एवं प्रथमखण्डः स्याद् द्वितीयमधुना ब्रुवे ।
 ईडावान् दक्षहस्ते च दक्षाङ्घ्रौ ब्रह्मतालकः ॥
 वामाङ्घ्रौ सिंहलीलञ्च तत्पाणौ यतिशेखरः ।
 पूर्ववद्योजनं पिण्डं तृतीयं खण्डमुच्यते ॥ .
 यतिशेखरतालस्तु दक्षपाणावलङ्कृतः ।
 ईडावान् दक्षपादे च वामाङ्घ्रौ ब्रह्मतालतः ॥
 वामहस्ते सिंहलीलः चतुर्थं रूपमुच्यते ।
 दक्षपाणौ सिंहलीलो दक्षाङ्घ्रौ यतिशेखरः ॥
 ईडावान् वामपादे च तत्पाणौ ब्रह्मतालकः ।
 एवं चतुर्धा तालानां पिण्डे भवति योजनम् ।
 चक्रबन्धेति विज्ञेयः काडस्तालविचक्षणैः ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 195 and
 Nṛttasamgraha P. 8 Lines 180-185)

चित्रम् - करणम्-

पादेन भ्रमरीं कुर्वन् भ्रामयेच्चापि मध्यमम् ।
 हस्तौ च भ्रामितौ स्यातां करणं चित्रसंज्ञकम् ॥

देवणः ।

चित्रम् - देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)--

चित्रं तत्साद्धर्मानस्थानकेन गतिस्तथा ।
 तिर्यङ्मुखा त्रिपताको मल्लिकामोदतालतः ॥
 दक्षिणे च तथा वामे मकरौ हृदि चञ्चला ।
 पूर्वमुक्ता गतिश्चान्ते तिरिपभ्रमरी भवेत् ।
 तत्करणं चमत्काराच्चित्रमित्यभिधीयते ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa Pages 207-208 and
 Nṛttasamgraha P. 7, Nines 160-165)

छत्रभ्रमरी - भ्रमरी-

स्थितैकेनाङ्घ्रिणा भूमौ दण्डवच्चोत्क्षिपेत् परम् ।
 सव्यावर्तं भवेद्यत्र सा छत्रभ्रमरी मता ॥

कुम्भः ।

(See Bharatakośa Page 217 and
 Nṛttasamgraha Page 12-13, Lines 304-310)

जङ्करी - देशीनृत्तम्-

यवन्या भाषया युक्तं यत्र गीतं सुनिश्चलम् ।
 कौलादिगजरायुक्तं महाङ्गेन विभूषितम् ॥
 विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रयविचित्रितम् ।
 कोमलाङ्गैर्यदा नृत्यं भ्रमर्यादिविराजितम् ॥

सशब्दादिक्रिया यत्र भ्रुवङ्गम्पादिभेदतः ।
यत्र चेष्टाविरहितं तन्मृत्तं जकरी मतम् ॥

पारसीकैः पण्डितैस्तु उद्ग्राहः स्वस्वभाषया ।
यद्गीतं जकरीसंज्ञं यवनानामतिप्रियम् ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 222 and
Nṛttasamgraha P. 21)

जारमान - देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)-

उत्कटस्थानके तत्स्यात् खण्डसूच्यावनीव्रजेत् ।
आदितालेन वामोर्ध्वत्रिपताकोऽथ दक्षिणः ॥

हस्तपार्श्वगतस्तिर्यक् त्रिपताकस्तथा त्विदम् ।
दक्षिणाङ्गे द्विवारं स्याच्चतुरश्रं ततः श्रयेत् ॥

सव्यवामपताकौ च स्वे स्वे पार्श्वे प्रसारयेत् ।
गृहीत्वा तिरिपं पश्चादेवमङ्गान्तरेण तु ॥

भवत्येवं सम्मुखं च सव्यास्यो दक्षिणां गतः ।
गृहीत्वा पूर्ववदक्षपादं वामस्तु संस्थितः ॥

तेनैवाङ्गेन तिरिपस्ततो वाममुखो भवेत् ।
ततः सम्मुखमास्थाय समसूच्यां पताकयोः ॥

प्रसारणं तु हृदये शिखरद्वयमाचरेत् ।
पवं द्विवारं कृत्वा च दक्षपादं निवेशयेत् ॥

उपरिष्ठाद्द्वामजानोर्दक्षिणावर्ततो भ्रमेत् ।
मण्डिभ्रमरिका सा स्यादेवमङ्गान्तरे भवेत् ॥

ततो वामाङ्घ्रिसूचीं च वामपार्श्वे प्रसारयेत् ।
अलपद्मद्वयं दक्षपार्श्वतश्च प्रसारयेत् ॥

ततः सव्यपदे सूचीं सव्यपार्श्वे प्रसारयेत् ।
परिवृत्यालपद्मौ च वामपार्श्वे प्रसारयेत् ॥

अलपद्मस्वस्तिकं तद्विधाय वामपार्श्वतः ।
अलपद्मद्वयं दक्षपादसूच्या सहैव तु ॥

भ्रामयन्मण्डलाकारमुल्बणौ वामपार्श्वतः ।
कृत्वा दक्षिणसूच्याश्च बलनत्रयमाचरेत् ॥

ततः पताकप्रसरं सव्यं कृत्वा तकारणम् ।
हृदि वामं च शिखरं तदा स्याज्जारमानकम् ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 229 and
Nṛttasamgraha P. 9, Nine 115)

ढेङ्की - धावनलागनृत्तम्-

वामः पुरोऽपरः पार्श्वे पादौ तालद्वयान्तरे ।
 पताकौ प्रसृतौ तिर्यक् स्थित्वा स्थित्वा तु धावनम् ॥
 कुट्टनं वामपादस्योत्प्लुतिं कृत्वा पदद्वये ।
 विरलावूर्ध्वगौ पादौ दक्षिणेन पदा पतेत् ।
 भूमौ यदा तदा ढेङ्की कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 238 and
 Nṛttasamgraha P. 12, Line 293)

ताण्डवं - नृत्तम्-

आसारितादिभिर्गतैरुद्धतप्रायवर्तितैः ।
 करणैरङ्गहारैश्च निवृत्तं विषमैरिह ।
 ताण्डवं तण्डुना प्रोक्तं नृत्तं नृत्तविदो विदुः । कुम्भः ।

(See Bharatakośa P. 243 and
 Nṛttasamgraha P. 10, Line 240)

तिरिपभ्रमरी - भ्रमरी--

अङ्घ्रिस्वस्तिकमादाय तिर्यग्भ्रमणतो भवेत् । कुम्भः ।
 कुञ्चितं पादमुत्क्षिप्य पार्श्वेनाक्षिप्य पृष्ठतः ।
 अन्याङ्घ्रेः स्वस्तिकं कृत्वा शरीरं भ्रामयेद्यदा ॥
 तिर्यग्यदृण्डपक्षाभ्यां यथा स्यात् स्वस्तिकच्युतिः ।
 तिरिपभ्रमरीत्येषा तदा तज्ज्ञैर्निगद्यते ॥ ज्यायनः ।

(See Bharatakośa P. 251 and
 Nṛttasamgraha P. 13 Line 308)

तिर्यङ्मुखा - देशीचारी--

स्थानके वर्धमानाख्ये स्थित्वा पादौ प्रसर्पतः ।
 सव्यापसव्ययोस्तूर्णे यत्र तिर्यङ् मुखा तु सा ॥ वेमः ।

(See Bharatakośa P. 251 and
 Nṛttasamgraha P. 4-7, Lines 83-161)

तिषटम् - देशीनृत्तम्--

नवजिततवर्गेण क्वचित्क्वचित् ।
 निर्मितं बिन्दुना वर्ज्यमिति तादिग्रहोत्तमम् ॥
 तालावृत्तानुगम्भीरैः तिषटं परिकीर्तितम् । वेदः ।

(See Bharatakośa P. 251-252 and
 Nṛttasamgraha P. 19, P. 475)

तुलम्—

सपादेनादितालेन धृत्या सव्यापसव्ययोः ।
स्वस्तिकीकृत्य जंघे चेद् भ्राम्येतां कर्तरीं जगुः ॥
राजतालेन तालेन नर्तनं सर्वदिङ्मुखम् ।
सौष्ठवाधिष्ठितं यत्र तत्तुलमभिधीयते ॥

(See Bharatakośa P. 847)

तुलम् - देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)--

हृदये शिखरद्वन्द्वं कुञ्चिते स्थानके ततः ।
चतुरश्रे स्थानके च पययिण पताककौ ॥
अधः प्रसार्य वामोऽङ्घ्रिः स्थाप्यस्तेन सहैव तु ।
वामोऽलपद्मः पुरतः प्रसार्याधः पताककः ॥
हृदये वामशिखरं प्रसृतं च पताककम् ।
दक्षिणे तुलमुद्दिष्टं आदितालेन सूरिभिः ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 255 and
Nṛttasamgraha P. 9, Lines 218-221)

ध्रुवपदनृत्तम् - देशीनृत्तम्—

गीयमाने ध्रुवपदे गीते भावमनोहरे ।
नर्तनं तनुयात् पात्रं कान्ताहास्यादिदृष्टिजम् ॥
नानागतिलसद्भावमुखरागादिसंयुतम् ।
सुकुमाराङ्गविन्यासं दन्तोद्योतितहावकम् ॥
खण्डमानेन रचितं मध्ये मध्ये च कम्पनम् ।
यत्र नृत्यं भवेदेवं ध्रुवदाख्यं तदा भवेत् ॥
प्रायशो मध्यदेशीयभाषया यत्र धातवः ।
उद्ग्राहध्रुवकाभोगास्त्रय पते भवन्ति ते ॥
उद्ग्राहरहितं केचित् परे त्वाभोगवर्जितम् ।
उद्ग्राहाभोगरहितमन्वर्थमपरे जगुः ।
स्यादक्षिभ्रुविकारादिशृङ्गाराकृतिसूत्रके ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 299 and
Nṛttasamgraha P. 15, Line 376)

नडनेरिः - देशीनृत्तम्—

द्रुतमानादादितालाद् भूयो भूयो विवर्तनम् ।
लोलितं भ्रमरं यत्र नडनेरिः स उच्यते ॥
संहतस्थानके सूत्रं गृहीत्वा शिखरं हृदि ।
कृत्वा तत्तत्सौष्ठवेन कुर्याच्च तलदर्शिनी ॥

दामोदरः ।

पताकौ पार्श्वयोः पश्चाच्छनकैश्च प्रसारयेत् ।
 पुनः शनैः पताकौ च तावानीय शिरो हृदि ॥
 कृत्वा ततो दक्षवामपर्यायेण द्विवारकम् ।
 ततः पताकः प्रसरः कुर्याच्च तदनन्तरम् ॥
 चतुर्दिक्षु प्रसरणं पताकस्य ततः परम् ।
 पर्यायेण पञ्चपदी सूळू ग्राह्या पुनस्ततः ॥
 पर्यायेण भ्रमिद्वन्द्व्यात्मकस्तु कृतकालतः ।
 वामदक्षिणयोः पश्चात् पार्श्वयोस्तिरिपं भवेत् ।
 ततस्तु मलकं कृत्वा विधेयं तु तकारणम् ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 306 and
 Nṛttasamgraha P. 19, Line 490)

नत्रम् - देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)—

नन्धावर्ते स्थानकं स्यान्मराला चारिका तथा ।
 ललितो भ्रमरो हस्तो नत्रं स्यात् समतालतः ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 306 and
 Nṛttasamgraha P. 8, Lines 168-169)

नागबन्धः - नृत्तबन्धः—

योऽस्मिन्स्तृतीयपङ्क्तेस्तु द्वितीयं स्थानमाश्रिता ।
 नर्तकी तु द्वितीयस्याः प्रथमं स्थानमाश्रयेत् ॥
 ततः प्रथमपङ्क्तेस्तु कमात् स्थानचतुष्टयम् ।
 प्राप्य तुर्यं द्वितीयायाः तृतीयस्यास्तृतीयकम् ॥
 कमाद् व्रजेदेवमन्या चरेद्विनिमयेन च ।
 नागबन्धं समाचष्ट तं सङ्ग्रामधनञ्जयः ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 313 and
 Nṛttasamgraha P. 9)

नामावली - देशीनृत्तम्—

समे स्थित्वा स्थाने यदि भवति सूळू सुललिता,
 करौ स्वान्ते कृत्वा रुचिरशिखरौ योगसहितौ ।
 ततः पार्श्वे सव्ये प्रसरति लताख्ये यदि भवेत्,
 करौ व्यावृत्त्यासौ हृदि शिखरतामेति सपदि ॥
 पुरः पार्श्वतो दक्षवामौ पताकौ,
 यदा प्रसृतौ तद्यक्षवामेऽलपद्मौ ।
 कृतौ हंसवक्त्रौ पुरस्तौ विधेयौ,
 करौ कालपद्मौ हृदिस्थौ पुनस्तौ ॥

भवेदादितालेन तत्कारपूर्वकमोयं सदा देवनामावलीनाम् ।
विनोदास्तु तासां सदा संप्रयुक्तश्चतुःपञ्चषट्खण्डकैः कोहलेन ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 327 and
Nṛttasamgraha P. 19, Lines 475-476)

नेरिः - देशीनृत्तम्—

आदितालानुगं यत्र विलम्बितलयान्वितम् ।
रेखामुद्राप्रमाणाद्यं नानाकरविभूषितम् ।
द्विचत्रगभिमुखं नृत्तं नेरिरित्यभिधीयते ॥

दामोदरः ।

(See Bharatakośa P. 341 and
Nṛttasamgraha P. 19, Lines 481-482)

पट्टिनृत्तम् - देशीनृत्तम्—

पद्मेकं तालहीनं बद्धं त्रैलिङ्गभाषया ।
पूर्वस्वरोच्चार्यमाणं यदेकयतिसंयुतम् ।
पट्टिः सा कथिता तज्ज्ञैर्विदग्धानां मनोहरा ॥

दामोदरः ।

(See Bharatakośa P. 348 and
Nṛttasamgraha P. 17, Lines 426-430)

पद्मबन्धः - नृत्तबन्धः—

स्थाने स्थिता द्वितीयस्यास्तृतीयं पद्मभ्रयेत् ।
तृतीयायाश्चतुर्थं च चतुर्थ्याश्च द्वितीयकम् ॥
स्थानक्रमाद् ब्रजेदेवं द्वितीया पङ्क्तिरिष्यते ।
तृतीयपङ्क्तेराद्यस्था द्वितीयाया द्वितीयकम् ॥
आद्यायाश्च तृतीयं च चतुर्थं च क्रमाद् ब्रजेत् ।
एवं तृतीयपङ्क्तिः स्यादथ तुर्याद्यमाश्रिता ॥
तद्द्वितीयं पदं प्राप्य तृतीयायास्तृतीयकम् ।
द्वितीयायाश्चतुर्थं च क्रमाद्गच्छेदियं पुनः ॥
चतुर्थी पङ्क्तिरेवं तु चतस्रः पात्रपङ्क्तयः ।
मिथश्चरन्ति मिलिता एवं विनिमयात् पृथक् ।
तं पद्मबन्धमाषष्ट रूपनारायणो नृपः ॥

वेमः ।

(See Bharatakośa P. 354 and
Nṛttasamgraha P. 9, Lines 196-199)

पिल्लमूरु - देशीनृत्तम्—

गीततालानुगो यत्र नानावाद्यनिर्मितः ।

अल्पो यः शब्द खण्डो द्वि थां-तो-धि-दिग-णान्तकः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 370 and

Nṛttasamgraha P. 17, Line 425)

प्रबन्धनृत्तम्—

षडङ्गादिप्रमाणेन प्रबन्धाध्यायसंमताः ।

कृता वाग्गेयकारैस्तु तेषां खण्डानुसारतः ॥

स्वराणां पाटशब्दानां तेनकानां लयेन च ।

संगीतोक्तक्रमेणैव पदानां भावदर्शनम् ।

ये प्रबन्धाः पुरा प्रोक्ताः तेषां नर्तनमाचरेत् ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 390 and

Nṛttasamgraha P. 2, Line 4)

प्रसरम् - देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)—

चतुरश्रस्थानके च शिखरद्वितयं हृदि ।

आविद्धवक्रहस्ताभ्यां पाष्णिरेचितयान्वितम् ॥

मध्यसञ्चेन प्रसरमादितालाच्च यद्भवेत् ।

सव्यः पताकः प्रसृतः पार्श्वे वामः पुरो गतः ॥

पताकः स्याद्विपर्यासादङ्गानां प्रसरे भवेत् ।

मण्डलस्थानके पार्श्वे पताकौ प्रसृतौ यदि ॥

तत्तत्स्थाने कुञ्चितके शिखरद्वितयं हृदि ।

समसूच्या भुवं गत्वा सौष्ठवेन यदा भवेत् ॥

पुनः पश्चात्प्रचलनमाविद्धप्रसृतौ करौ ।

व्यावृत्य पुरतः पश्चात् परिवर्तनतो भवेत् ॥

संहत्स्थानके स्थित्वा भ्रमरीमाचरेत्ततः ।

प्रान्ते च चतुरश्रं स्यात् प्रसरोडुपमुच्यते ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 396 and

Nṛttasamgraha P. 9, Lines 222-225)

बाह्यभ्रमरी - भ्रमरी—

दक्षिणेनाङ्घ्रिणा स्थित्वा वाममङ्घ्रिं तु कुञ्चयन् ।

वामावर्तं भवेद्यत्र सा बाह्यभ्रमरी मता ॥

वेदः ।

सव्येतरेण पादेन स्थित्वा सव्याङ्घ्रिकुञ्चनात् ।

सव्यावर्तं भ्रमेद्यत्र सा बाह्यभ्रमरी मता ॥

कुम्भः ।

(See Bharatakośa P. 419 and

Nṛttasamgraha P. 11, Line 254)

भिन्नम् - देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)—

कुञ्चिते स्थानके स्थित्वा यदा नूपुरपादिका ।
 वामोऽधोमुखमंसास्यः अलपद्मः प्रकम्पितः ॥
 पादः प्रसारिताग्रस्थः त्रिपताकः शिरः स्थितः ।
 दक्षिणे प्राग्गतिर्नोत्वा तथा वामे च चारिवत् ॥
 नूपुराङ्गविपर्यासान्द्रमरी रचिता यदा ।
 कीडातालेन विहितं तद्भिन्नमभिधीयते ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 438 and
 Nṛttasamgraha P. 7, Lines 157-159)

मूरु - देशीनृत्ताङ्गम्—

दृश्ये वामशिखरं स्थाप्य सव्यपताककम् ।
 दक्षपाश्वे प्रसार्याथ दक्षिणावर्ततस्ततः ॥
 भ्रमरीमाखरेत् पश्चादेकपादोपरि स्थितः ।
 नम्रोभूत्वा त्रिपताकं पुरतश्च प्रसारयेत् ॥
 हृदि वामं च शिखरं न्यस्य स्कन्धानतं शिरः ।
 चलनद्वितयं कुर्यादन्ते स्याच्च तकारणम् ।
 मूरुलक्षणमित्युक्तं सङ्गीतज्ञैः पुरातनैः ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 500 and
 Nṛttasamgraha P. 19, Lines 497-498)

रथचक्रा - देशीचारी—

स्थाने तु चतुरस्राख्ये स्थित्वा त्रिष्टौ परस्परम् ।
 पुरतः पृष्ठतो वापि चरणौ चेत् प्रसर्पतः ।
 यत्रैषा रथचक्राख्या चारी तु परिकीर्तिता ॥

वेमः ।

(See Bharatakośa P. 524 and
 Nṛttasamgraha P. 7, Line 142)

रायबङ्गालः - देशीनृत्तम् ।

सूत्रं बध्वैकपादेन दक्षपादेन कुट्टनम् ।
 तत उत्प्लुत्य चरणावूर्ध्वं च विरलीकृतौ ॥
 अन्तराले भ्रामयित्वा निपतेद्दरणीतले ।
 रायबङ्गालध्वाङ्गोऽयं कथितः पूर्वसूरिभिः ॥

वेदः ।

(See Bharatakośa P. 550 and
 Nṛttasamgraha P. 11, Lines 266-272)

शब्दचाली(लिः) - देशीनृत्तम्—

प्राग्वत् कृत्वा स्थानहस्तौ मध्यसञ्चेन नर्तकः ।
यत्र स्थित्वैकपादेन शब्दवर्णानुगामिनीम् ॥
गतिं नयेद् द्वितीयेन दक्षिणाध्वनि शोभनम् ।
तद्वत्पादान्तरेणाथ क्रमेणैतद्वयोर्यदा ॥
पर्यायेण गतिं कुर्याद्भार्तिकदिषु पञ्चसु ।
मार्गेष्वसौ शब्दचाली पण्डितैश्च निरूपिता ॥

अथवा

मार्गतालक्रमेणैव रासतालेन नर्तनम् ।
शब्दचालिस्तथा प्रोक्ता लक्ष्यदृष्ट्या विचक्षणैः ॥ दामोदरः ।

(See Bharatakośa P. 656 and

Nṛttasamgraha P. 2, Line 17)

सङ्कीर्णनेरिः - देशीनृत्तम्—

स्थानैः संहतकादिषोडशमुखैश्चारीभिरासप्तभिः,
त्रिंशत्सप्तमितैर्युतैरमितैरन्यैस्त्रिभिर्हस्तकैः ।
दृग्मेदैः करणैर्वैरैथशिरोमेदाङ्गहारैः स्फुटा,
सङ्कीर्णा गदिता बुधैर्नटमुदे नेरिर्मनोहारिणी ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 691 and

Nṛttasamgraha P. 19, Line 487)

सालङ्कनेरिः - देशीनृत्तम्—

सालङ्कनेरिः स ज्ञेयो युतायुतकरैः कृतः । वेदः ।

(See Bharatkośa P. 723 and

Nṛttasamgraha P. 19, Line 484-85)

सूळ - देशीनृत्तम्—

एकः समस्थितः पृष्ठे द्विवितस्तिः पुरः पुरः ।
सूळस्थानकमेतत् स्यादेवं चरणरक्षणा ॥
पुरतः परितो वामः पताकोऽन्यस्तु पार्श्वतः ।
दक्षिणाभ्रमणात् सूळं द्वित्रिवारं चरेत्ततः ॥
इति ध्वाडनत्ते सूडुलक्षणम् ।

देवेन्द्रः ।

(See Bharatakośa P. 737-38 and

Nṛttasamgraha P. 17, Line 436)

सूळपम् - देशीनृत्तम्—

किन्नरीतालसंयुक्तं तेन शब्देन नर्तनम् ।

मृदङ्गादियुतं यत् स्यात् सूळपं तन्निगद्यते ॥ दामोदरः ।

(See Bharatakośa P. 738 and

Nṛttasamgraha P. 17, Line 434)

शुद्धिपत्रक

	Read as	Line	Page
मव्यमो	मध्यमो	§10.1268 (footnote)	1
१३, ४०	१४, 40	40	3
चायी	चार्या	80	4
ब्राह्म	बाह्य	47	7
कोप्पल	कोत्पल	50	7
सबालककर	सबालमकर	62	7
पक्षिसालुवः	पक्षिसुलवः	73	11
56	55	55	11
तदाडालु	तदाऽडालु	77	11
समुत्प्लुत्य	समुत्प्लुत्य	90	12
65	95	95	12
कचित्	कचित्	399	16
उरुपेष्बपि	उरुपेष्बपि	16	23
Omit	* at the end	—	24

★ ★

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी - तार्किकचूडामणि सर्वदेव । २ यन्त्रराजरचना - महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता । ३ कान्हडदे प्रबन्ध - महाकवि पद्मनाभ । ४ क्यामखारासा - नवाब अलफखां (कविवर जान) । ५ लावारासा - चारण कविया गोपालदान । ६ महर्षिकुलवैभवम् - विद्यावाचस्पति स्व. श्री मधुसूदनजी ओझा । ७ वृत्तिदीपिका - मौनि कृष्णभट्ट । ८ राजविनोद काव्य - कवि उदयराज । ९ तर्कसंग्रहफकिका - क्षमाकल्याणगणी । १० नृत्तसंग्रह - अज्ञातकर्तृक ।

प्रेस में

१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव - सिद्धसारस्वत लघुपण्डित । २ बालशिक्षा व्याकरण - ठक्कुर संग्रामसिंह । ३ करुणामृतप्रपा - महाकवि ठक्कुर सोमेश्वरदेव । ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा - पं. कृष्णमिश्र । ५ शकुनप्रदीप - पं. लावण्यशर्मा । ६ उक्तिरत्नाकर - पं. साधुसुन्दर गणी । ७ प्राकृतानन्द - पं. रघुनाथ कवि । ८ ईश्वरविलासकाव्य - पं. कृष्णभट्ट । ९ चक्रपाणिविजयकाव्य - पं. लक्ष्मीधर भट्ट । १० काव्यप्रकाश - भट्ट सोमेश्वर । ११ कारकसंबन्धोद्योत - पं. रभसनन्दी । १२ शृंगारहारवलि - हर्षकवि । १३ कृष्णगीतिकाव्यानि - कवि सोमनाथ । १४ नृत्यरत्न कोश - महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव । १५ नन्दोपाख्यान - अज्ञातकर्तृक । १६ चान्द्रव्याकरण - चन्द्रगोमी । १७ शब्दरत्नप्रदीप - अज्ञातकर्तृक । १८ रत्नकोश - अज्ञातकर्तृक । १९ कविकौस्तुभ - पं. रघुनाथ मनोहर । २० एकाक्षरकोशसंग्रह - विविधकविकर्तृक । २१ शतकत्रयम् - भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त । २२ वसन्तविलास - अज्ञातकर्तृक । २३ दुर्गापुष्पाञ्जलि - म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी । २४ दशकण्ठवधम् - म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी । २५ गोरा बादल पदमिणी चरुपइ - कवि हेमरतन । २६ बांकीदासरीःख्यात - महाकवि बांकीदास । २७ मुंहता नैणसीरी ख्यात - मुंहता नेणसी इत्यादि ।

प्राप्तिस्थान - सञ्चालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर ।